सृजन

सत्र - 2019-20

वार्षिक पत्रिका

शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रतलाम (म.प्र.)

राष्ट्र गीत

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्!

सुजलाम्, सुफलाम्, मलयज शीतलाम्,

शस्यश्यामलाम्, मातरम्!

वंदे मातरम्!

शुभ्रज्योत्सनाम् पुलकितयामिनीम्,

फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्,

सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्,

सुखदाम् वरदाम्, मातरम्!

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्॥

सृजन

महाविद्यालय की शैक्षिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति की वार्षिकी

वर्ष 2019-20
संयुक्तांक संस्करण

डॉ. संजय वाते
प्राचार्य एवं संरक्षक

डॉ. सी.एल. शर्मा
सम्पादक

डॉ. ललिता मरमट
सहायक सम्पादक

विशेष सहयोग
डॉ. अंजेला सिंगारे
डॉ. रियाज मंसूरी

आवरण : ऋतम उपाध्याय

मुद्रक : अशोक प्रिंटिंग प्रेस, नजर बाग, बैंक कॉलोनी, रतलाम

:: प्रकाशक ::
शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रतलाम (म.प्र.).
(NAAC Accredited B+ And College With Potential For Excellence)
दूरभाष : 07412-235149, वेबसाईट : www.mpcolleges.nic.in/ratlam
Email: hegaaspgcrat@mp.gov.in, pgcolrtm@hotmail.com

अनुक्रमणिका

1. महाविद्यालय एक नजर में 10
2. महाविद्यालय का SOWC विश्लेषण 11
3. प्राचार्य की कलम से 12
4. सृजन के आस-पास 13
5. स्वामी विवेकानन्द कॅरियर मार्गदर्शन योजना 14
6. एन.सी.सी. प्रतिवेदन 15
7. राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर प्रतिवेदन 16
8. शारीरिक शिक्षा विभाग 17
9. म.प्र. की अर्थव्यवस्था-विकास हेतु नई व्यूहरचना की आवश्यक्ता 18
10. मेरी अंडमान यात्रा- डॉ. मायारानी देवड़ा 19
11. माँ बाप का प्यार - सुनिता डामर बी.एससी. द्वितीय वर्ष 20
12. छत्रपति शिवाजी का व्यक्तिव, चरित्र और नेतृत्व 21
13. अपनी क्षमताओं को पहचानिए - आयुष मोहन सिंगाड़ बी.एससी. द्वितीय वर्ष 22
14. प्राचीन संस्कृत कथा - साहित्य - डॉ. ललिता मरमट 23
15. शक्ति का सदुपयोग - डॉ. आर.आर. रोमड़े 24
16. औषधि पादप उद्यान 24
17. इको क्लब 25
18. नियमित योग : स्वास्थ्य की कुंजी - डॉ. भारती लुणावत 26
19. ज़िद - डॉ. श्वेता टेवानी 27
20. कैसे भूलूँ बचपन अपना - विशाल दड़िंग बी.एससी. तृतीय वर्ष 27
21. बरसात - डॉ. गोपालसिंह खराड़ी 28
22. गज़ल - डॉ. दिनेश जाधव 28
23. राष्ट्रीय क्रैडिट कोर : सामान्य परिचय - कैडेट जयदीप सिंह डोडिया 29
24. संगीत : एक अनवरत अभिव्यंजित कला 30
25. राष्ट्रीय एकता शिविर बैंगलूरू - शुभम पंवार- एम.ए. द्वितीय सेम. 31
26. प्रोढ़ शिक्षा - जीवनलाल वरतीया बी.ए. तृतीय वर्ष 32
27. वीरता के प्रतीक : शिवाजी महाराज 33
23. तिरंगा - अजय मूंदड़ा बी.एससी. तृतीय वर्ष 33
24. माँ - वंदना बदेरा बी.एससी. प्रथम वर्ष 34
25. ज़िदगी - मुस्कान मकवाना बी.ए. प्रथम वर्ष 34
26. स्वयं से बात करें - पवनसिंह राजपूत एम.ए. प्रथम सेमेस्टर 35
27. जीत, क्याँ लिखूँ ? - मनीष राठौड़ बी.ए. तृतीय वर्ष 35
28. हिन्दू संस्कृति में नववर्ष 36
29. हारा नहीं हूँ मैं - कान्हा पँवार बी.एससी. तृतीय वर्ष 36

अनुक्रमणिका

30. अनुभूति (संकलित) - प्रिया ठाकुर बी.एससी. तृतीय वर्ष 37
31. क्यों लोग मेहनत को नहीं पहचानते ? 37
32. देश भक्ति, राष्ट्र निर्माण, देश प्रेम - हिम्मत सिंह मकवाना बी.ए. तृतीय वर्ष 38
33. थेलेसीमिया जागरूकता अभियान - गोपाल राठोड़ बी.ए. तृतीय वर्ष 39
34. सहायता - रणजीत गुर्जर बी.ए. द्वितीय वर्ष 39
35. एकाग्रता - मनीष बैरागी एम.ए. (अंग्रेजी) 40
36. शांति और क्रांति - अनुज पाठक बी.ए.. प्रथम वर्ष 40
37. बेटियाँ - पूनम बी.ए. तृतीय वर्ष 41
38. भारत को सशक्त बनाना है - रागिनी यादव बी.ए. तृतीय वर्ष 41
39. सब कुछ आसान है - ज्योति कटारा बी.एससी. द्वितीय वर्ष 42
40. शहीद जवान - अर्चना धानक बी.ए. द्वितीय वर्ष 42
41. नव उद्यमी - विकास गौड़ 43
42. भ्रुण हत्या - अनुराधा राठौर बी.ए. द्वितीय वर्ष 43
43. सफलता का मंत्र - अलशिफा शेख बी.एससी. प्रथम वर्ष 44
44. ज़िन्दगी तुम खुद बनाते हो - जाहरा मिर्जा बी.ए. द्वितीय वर्ष 44
45. ज़िन्दगी - अंशुल कसेरा बी.एससी. द्वितीय वर्ष 44
46. बेटी से घर स्वर्ग बनता है - डॉली राठौर बी.ए. द्वितीय वर्ष 45
47. जीवन - प्रद्युम्न सिंह रघुवंशी बी.ए. षष्ठ सेम. 45
48. राष्ट्रीय सेवा योजना - शिविर के अनुभव- हिम्मतसिंह मकवाना बी.ए.तृतीय वर्ष 46
49. ख़्वाब मेरे - आयुषि जाट बी.ए. तृतीय वर्ष 46
50. लड़कियाँ (संकलित) - रोशन आरा रेहमानी 47
51. पर्यावरण की रक्षा - लोकेन्द्र मकवाना बी.ए. तृतीय वर्ष 47
52. रुकना नहीं है तुम्हें - वर्षा शेर चौधरी बी.एससी. तृतीय वर्ष 48
53. किरण उम्मीदों की- बी.एससी. तृतीय वर्ष 48
54. याद फिर आने लगे (संकलित)- मेघा मेहता बी.एससी. तृतीय वर्ष 49
55. मुझे सहेजना है घर - संजय आटेड़िया शोधार्थी हिन्दी 49
56. Lesson of life - Rohit singh gehlot B.A. English 50
57. Women Empowerment - Ojasvi Jain M.Sc. Chem. 50
58. Never to get Disheartened - Parul Chopra M.A. Eng. 51
59. There is will There is a way - Kavita Rathod M.Sc. Chem. 51
60. Changing value system - A need for re-orientation - Aditi Joshi B.Sc. 52
61. Truths of life - Kirti Bairagi M.Sc.Microbiology 52

कमल नाथ
मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश शासन
भोपाल – 462 004

//संदेश//

प्रसन्नता का विषय है कि शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रतलाम द्वारा वार्षिक पत्रिका 'सृजन' का प्रकाशन किया जा रहा है।

युवाओं को रचनात्मक गतिविधियों के साथ ही भारतीय संस्कृति, संस्कार, सभ्यता और मूल्यों से जोड़ने की जरूरत है। हमारे देश की यही शक्तियाँ हैं जो हमारी अनेकता में एकता की भावना को मजबूत बनाती हैं। युवाओं को हर क्षेत्र में हो रहे परिवर्तन से भी जोड़ा जाना चाहिए जिससे वे अपनी प्रगति में पिछड़ न जाएँ।

मुझे आशा है कि पत्रिका 'सृजन' में छात्र-छात्राओं में लेखन के प्रति रूचि को प्रोत्साहित करने के साथ ही ज्ञानवर्द्धक सामग्री का भी संकलन किया जाएगा।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ ।

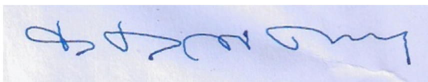

कलम नाथ

जीतू पटवारी
मंत्री
खेल एवं युवा कल्याण, उच्च शिक्षा,
मध्यप्रदेश शासन

कार्यालय भोपालः
डी-13, 74 बंगला भोपाल (म.प्र.)
दूरभाष क्र. : 0755-2441620, 2446227

//संदेश//

हर्ष का विषय है कि शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रतलाम द्वारा वार्षिक पत्रिका 'सृजन' का प्रकाशन किया जा रहा है।

निश्चित ही महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन से महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को अपनी लेखन प्रतिभा तथा विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होगा।

महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के लेखों, विचारों को वार्षिक पत्रिका में सम्मिलित किया जाएगा, जिससे अन्य विद्यार्थियों में भी रचनात्मकता का विकास हो सके। साथ ही पत्रिका में प्रकाशित होने वाली सामग्री विद्यार्थियों के लिये प्रेरणादायी, उपयोगी तथा मार्गदर्शी साबित होंगी, ऐसी आशा है।

पत्रिका 'सृजन' के सफल प्रकाशन के लिए महाविद्यालय परिवार को मेरी ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

जीतू पटवारी

आनंदीबेन पटेल
पूर्व राज्यपाल
मध्यप्रदेश

राजभवन
भोपाल
मध्यप्रदेश

सत्यमेव जयते

//संदेश//

यह हर्ष का विषय है कि शासकीय स्नातकोत्तर कला एवं विज्ञान (अग्रणी) महाविद्यालय, रतलाम द्वारा महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका 'सृजन' का प्रकाशन किया जा रहा है।

विद्यार्थियों के समग्र विकास में महाविद्यालयीन पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। पत्रिकाएँ विद्यार्थियों में रचनात्मक और साहित्यिक प्रतिभा को व्यक्त करने का मंच होती हैं। पत्रिका में ज्ञानवर्धक और उत्प्रेरक जानकारियों के समावेश से विद्यार्थियों को प्रेरणा और मार्गदर्शन मिलता है।

आशा है कि पत्रिका में देश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, महापुरुषों और विद्वानों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आधारित आलेखों का प्रकाशन छात्र-छात्राओं में राष्ट्र-भक्ति और समाज-सेवा की भावना को सुदृढ़ करने का माध्यम सिद्ध होगा।

शुभकामनाएँ ।

आनंदीबेन पटेल

हर्षविजय गेहलोत (गुड्डू)
विधायक
क्षेत्र क्रमांक 221 सैलाना
जिला, रतलाम (म.प्र.)

मो. 9300631509, 9755332221
निवास : पुराना न.पा. भवन, सैलाना
जिला-रतलाम (म.प्र.)
स/05, नवीन पारिवारिक परिसर,
विधायक विश्राम गृह, भोपाल (म.प्र.)

//संदेश//

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रतलाम की वार्षिक पत्रिका 'सृजन' का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय की पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थी न केवल अपनी प्रतिभा एवं विभिन्न उपलब्धियों को अभिव्यक्त करते हैं बल्कि इससे विद्यार्थियों में एक स्वस्थ सृजनात्मक स्पर्धा के साथ सामयिक चुनौतियों से लड़ने की गहरी समझ भी पैदा होती है।

मैं महाविद्यालय के समस्त विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए आशा करता हूँ कि विद्यार्थी 'सृजन' के माध्यम से अपने ज्ञान और कौशल को समाज तक पहुँचाकर एक स्वस्थ एवं शिक्षित समाज के निर्माण में सहभागी बनेंगे।

'सृजन' के प्रकाशन हेतु मेरी अनन्त शुभकामनाएँ।

हर्षविजय गेहलोत

डॉ. (श्रीमती) सुनीता यार्दे

(M.S.)
''पूर्व महापौर''

नगरपालिक निगम रतलाम

निवास : 07412-270550
फेक्स : 07412-270556
मोबा. : 096440-00500

//संदेश//

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि वार्षिक पत्रिका 'सृजन' का प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी शासकीय स्नातकोत्तर कला एवं विज्ञान (अग्रणी) महाविद्यालय रतलाम द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है।

यह पत्रिका महाविद्यालय की साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं शैक्षणेत्तर गतिविधियों का पूर्ण प्रतिबिम्ब तो करती ही है, महाविद्यालय की सृजनशील प्रतिभाओं को अपनी अभिव्यक्ति का अवसर भी उपलब्ध कराती है।

आशा है 'सृजन' निरन्तर सफलता के उच्च कीर्तिमान स्थापित कर अपने उद्देश्य में सफल होगी तथा महाविद्यालयीन परिवार इससे लाभान्वित होगा।

शुभकामनाओं सहित ...

डॉ. (श्रीमती) सुनीता यार्दे

प्रो. बालकृष्ण शर्मा

कुलपति
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

विक्रम विश्वविद्यालय
नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्रदत्त
उज्जैन (म.प्र.) 456010 भारत
दूरभाष : 0734-2514270 (कार्यालय)
: 0734-2512856 (निवास)
फेक्स : 0734-2514276
ईमेल : vcvikramujn@gmail.com
वेबसाईट : www.vikramuniv.ac.in

//संदेश//

मुझे यह जान कर अत्यन्त प्रसन्नता है कि शासकीय स्नातकोत्तर कला एवं विज्ञान (अग्रणी) महाविद्यालय, रतलाम द्वारा महाविद्यालयीन वार्षिक पत्रिका के नवीन अंक 'सृजन' का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका निश्चित ही महाविद्यालय के विद्यार्थियों की रचनाशीलता का विकास करने में सहायक सिद्ध होगी।

इस तरह की पत्रिकाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी सृजनात्मकता के लिए सार्थक अवसर प्राप्त होता है। मुझे आशा है कि इस पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा प्रकट करने का समुचित अवसर उपलब्ध होगा।

मैं महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित होने जा रही पत्रिका 'सृजन' के सफल प्रकाशन एवं महाविद्यालय के सर्वतोमुखी विकास के लिए अपनी समग्र शुभेच्छाएँ प्रेषित करता हूँ।

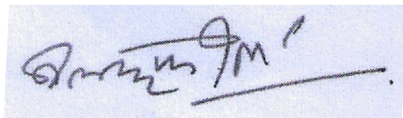

प्रो. बालकृष्ण शर्मा

महाविद्यालय एक नजर में

शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रतलाम न केवल सम्पूर्ण रतलाम जिले में बल्कि विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन परिक्षेत्र में भी शिक्षा एवं शोध के उच्च केंद्र के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान का प्रतीक है।

शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रतलाम को मूल रूप से एक स्कूल भवन के रूप में डिजाइन किया गया था। पचास के शुरूआती दशक में इसे इंटर कॉलेज के स्तर तक उच्चयित किया गया था किन्तु मध्य प्रदेश के निर्माण के साथ ही पचास के दशक के बाद यह डिग्री कॉलेज के रूप में अस्तित्व में आया। 1962 में महाविद्यालय ने स्नातकोत्तर महाविद्यालय का दर्जा प्राप्त किया।

वस्तुतः यह एक स्वायत्त संस्थान न होकर विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन और मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रचलित नियमों और विनियमों के अनुसार संचालित होता है। इसे वर्ष 1999 में रतलाम जिले का अग्रणी महाविद्यालय घोषित किया गया है। वर्तमान में महाविद्यालय दो संकायों - कला और विज्ञान में शिक्षा प्रदान करता है तथा 16 विषयों में स्नातकोत्तर कार्यक्रम चलाता है। शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रतलाम ने न केवल शैक्षणिक क्षेत्र में बल्कि शिक्षणेत्तर क्षेत्र में भी संकाय सदस्यों की व्यावसायिक कुशलता और योग्यता के लिए ख्याति प्राप्त की है।

इस महाविद्यालय में शिक्षकों के 70 पद स्वीकृत हैं। वर्तमान में 62 नियमित शिक्षक कार्यरत हैं, तथा शेष रिक्त पदों पर अस्थायी रूप से अतिथि शिक्षक कार्य कर रहे हैं। स्ववित्त पाठ्यक्रम के अन्तर्गत 16 शिक्षक कार्यरत हैं। महाविद्यालय प्रशासन और शैक्षणिक स्टॉफ की सहायता के लिए इस महाविद्यालय में 45 गैर-शैक्षणिक कर्मचारी काम कर रहे हैं। इस महाविद्यालय का वार्षिक बजट 6 करोड़ रुपये से अधिक है।

महाविद्यालय में एक बहुत समृद्ध पुस्तकालय है जिसमें विभिन्न विषयों की 85000 से अधिक पुस्तकें हैं। महाविद्यालय के वाचनालय में लगभग सभी मुख्य पत्रिकाएं और समाचार पत्र विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु उपलब्ध करायी जाती हैं। महाविद्यालय में एक कम्प्यूटर लैब भी है जिसमें 40 कम्प्यूटर सिस्टम हैं। महाविद्यालय के नौ विभाग सक्रिय रूप से शोध कार्य से जुड़े हुए हैं।

वर्ष 2016 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा महाविद्यालय को उत्कृष्टता हेतु संभावनायुक्त महाविद्यालय (College with Potential for excellence) का दर्जा प्रदान किया गया है। शिक्षा के साथ - साथ महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व विकास के लिए एन.सी.सी. एवं एन.एस.एस. की इकाइयां भी कार्यरत हैं।

विजन

महाविद्यालय को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक उत्कृष्ट संस्थान के रूप में तैयार करना ताकि आदिवासी एवं समाज के वंचित वर्ग को गुणवत्तापूर्ण एवं मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान कर सकें एवं उनके जीवन में बदलाव लाकर एवं नेतृत्व क्षमता का विकास कर राष्ट्र के समावेशी विकास में उन्हें भागीदार बना सकें।

मिशन

- समाज के वंचित वर्गों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना।
- विद्यार्थियों में रोजगारपरकता को बढ़ाने के लिए उनमें व्यावसायिकता एवं कौशल का विकास करना।
- नई चुनौतियों का सामना करने के लिए विद्यार्थियों में नेतृत्व गुणों का विकास करना।
- शिक्षण के साथ ही सीखने की प्रक्रिया को बढ़ावा देने के लिए उन्नत तकनीक के उपयोग को प्रोत्साहन देना।
- स्टॉफ एवं विद्यार्थियों को शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए प्रोत्साहित करना।
- समय प्रबन्धन एवं कार्य चेतना की संस्कृति को विकसित करना।
- प्रत्यायन परिषद से उच्च ग्रेड प्राप्त करने का प्रयास करना।
- शिक्षा में मानवीय एवं नैतिक मूल्यों पर जोर दिया जाना।
- शिक्षा में रचनात्मकता, नवाचारों एवं नवीनतम स्तर के ज्ञान को बढ़ावा देना।

महाविद्यालय का SOWC विश्लेषण

शक्ति (ताकत)

* योग्य संकाय सदस्य
* पर्यावरण के अनुकूल 24 एकड़ में फैला वृहद परिसर
* शासकीय महाविद्यालय
* जिले का सबसे पहला एवं अग्रणी महाविद्यालय
* उत्कृष्टता के लिए सम्भावनायुक्त महाविद्यालय के रूप में यू.जी.सी. से दर्जा प्राप्त
* आरक्षित क्षेणी के 78% विद्यार्थी
* 5 स्ववित्त विभागों सहित 16 स्नातकोत्तर विभाग
* शोध मार्गदर्शक के रूप में महाविद्यालय के 8 शिक्षक पंजीकृत 16 विभाग विश्वविद्याल द्वारा मान्यता प्राप्त अनुसंधान केन्द्र

कमजोरियाँ

* स्थायी पदों पर कई रिक्तियाँ
* विद्यार्थियों में अंग्रेजी एवं गणित विषय के कौशल का अभाव
* औपचारिक परामर्श की अनुपस्थिति
* महाविद्यालय द्वारा शैक्षणिक संस्थानों एवं उद्योगों के साथ समझौता/ज्ञापन सहयोग की कमी
* विद्यार्थियों में निम्न पारगमन दर
* उच्च डॉपआउट अनुपात

अवसर

* विद्यार्थियों के लिए अधिक एडऑन पाठ्यक्रम शुरू करने की सम्भावना
* शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में आईसीटी के उपयोग के लिए पर्याप्त अवसर
* रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम शुरू करना
* अनुसंधान सुविधाओं का सुदृढ़ीकरण करना

चुनौतियाँ

* शिक्षकों एवं गैर - शिक्षण कर्मचारियों की भर्ती के लिए सरकार पर निर्भरता
* विद्यार्थियों की रोजगार क्षमता में सुधार
* विद्यार्थियों की उपस्थिति में सुधार करना एवं डॉपआउट दर को कम करना।

प्राचार्य की कलम से ....

जीवन में गुणात्मक सुधार और सर्वोच्च मूल्यपरक आकांक्षाओं की प्राप्ति के लिए शिक्षा और ज्ञान का महत्व सर्वविदित है, शिक्षा न केवल हमारी व्यावहारिक समझ और कौशल को परिमार्जित करती है बल्कि शानदार और बेहतर जीवन जीने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक भी है। मेरा यह स्पष्ट रूप से मानना है कि सोशल मीडिया के इस बेहद रोमांचक दौर में भी औपचारिक शिक्षा का महत्व कम नहीं हुआ है। दरअसल शिक्षा व्यक्तित्व विकास की तमाम सम्भावनाओं का विकास करके व्यक्ति को शारीरिक और मानसिक सामर्थ्य प्रदान कर एक सक्षम नागरिक के निर्माण पर जोर देती है। शिक्षा प्राप्त करने का अर्थ किसी अच्छे संस्थान से डिग्री प्राप्त कर कोई अच्छा व्यवसाय कर लेना, उच्च पद प्राप्त कर लेना अथवा नौकरी हासिल कर लेना ही नहीं है, बल्कि एक बेहतर मनुष्य के रूप में सामाजिक जीवन के ताने - बाने को हम कितने अच्छे से समझ कर उसका निर्वहन कर पाते हैं, यह भी है।

मेरी कोशिश है कि विद्यार्थियों को ऐसा शैक्षिक परिसर उपलब्ध हो जिसमें वे न केवल अपने शैक्षणिक कौशल को विकसित करें, बल्कि एक अच्छे मनुष्य बनने की तमाम सम्भावनाओं को भी निखारें। यकीनन इस महाविद्यालय के विस्तृत परिसर में ऐसी सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं जो विद्यार्थियों को ज्ञानार्जन के साथ-साथ वैश्विक चुनौतियों के प्रति भी सामर्थ्यवान बनाती हैं। महाविद्यालय में कॅरियर अवसर मेला, युवा उत्सव, एन.सी.सी., राष्ट्रीय सेवा योजना जैसी गतिविधियों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को व्यक्तित्व विकास एवं कौशल विकास से जोड़कर उन्हें सक्षम बनाने की कई योजनाएँ संचालित हैं। विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि वे इसका भरपूर लाभ लें।

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'सृजन' के तेरहवें अंक के प्रकाशन पर मैं महाविद्यालय के समस्त विद्यार्थियों एवं सम्पादक मण्डल को अपनी शुभेच्छाएं प्रेषित करते हुए आशा करता हूँ कि यह पत्रिका हमारे प्रतिभावान विद्यार्थियों की रचनाशीलता को समाज तक अवश्य ही सम्प्रेषित करेगी।

अनेकानेक शुभकामनाओं के साथ ....

डॉ. संजय वाते

प्राचार्य

सृजन के आस-पास

''इदमन्धतमः कृत्सनं जायेत् भुवनत्रयम्''

महाकवि दण्डी ने काव्यादर्श में कहा है कि यह संसार घोर अंधकार में निमग्न हो जाता यदि सृष्टि के आरम्भ से ही ज्ञान (शिक्षा) की ज्योति न जल रही होती। शिक्षा की जिस ज्योति को हमारे प्राचीन ग्रंथों में इतना अधिक महत्व दिया गया है। हमारी शिक्षा व्यवस्था क्या उसी रोशनी के इर्द गिर्द है ? खास तौर पर उच्च शिक्षा। बहुत मुमकिन है कि हमने शिक्षा का उद्देश्य लक्ष्य प्रधान रखा है। जिससे संख्यात्मक वृद्धि के रूप में एक आंकड़ा तो हमने हासिल कर लिया किन्तु शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य कहीं तिरोहित सा दिखाई पड़ता है। कम से कम पिछड़ा हुआ तो अवश्य दिखाई पड़ता है। रही सही कसर शिक्षा की बाज़ारवादी व्यवस्था ने पूरी कर दी। ऐसी व्यवस्था व्यक्ति को साक्षर तो बनाती है पर शिक्षित नहीं। वह व्यक्ति को उपाधि तो प्रदान कर सकती है, रोजगार तो दे सकती है, आंशिक कौशल विकसित कर सकती है, अन्वेषण और अनुसंधान को भी बढ़ावा दे सकती है, किन्तु सुदृढ़ चारित्रिक एवं नैतिक सामर्थ्य से पूर्ण और सामाजिक दायित्व बोध से भरा कुशल मनुष्य नहीं गढ़ सकती। क्योंकि हमने शैक्षणिक संस्थाओं को ज्ञानार्जन के पावन स्थल के बजाय व्यावसायिक उपक्रम के रूप में ज्यादा विकसित होने दिया है। हमने इसके दीर्घ कालीन प्रभावों के अनुमान के बिना ही इन्हें फलने-फूलने दिया है। मेरी चिन्ता केवल यह नहीं है कि हमने शिक्षा का निजीकरण कर उसे व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा की अतार्किक कार्यसूची में डाल दिया है, मेरी चिन्ता यह भी है कि बाज़ारवादी शक्तियों से शिक्षा की पवित्रता और जन सुलभता को कैसे बचाया जाय ? शिक्षा को केवल कौशल विकास का मुद्दा न बनाकर सामाजिक कल्याण और व्यक्तित्व रूपांतरण की प्रक्रिया के रूप में कैसे जन जागृति और विकास लक्ष्यों से जोड़ा जाय ? साथ ही शिक्षा को कैसे बहुआयामी और विविधा सम्पन्न बनाया जाय ? यकीनन समय रहते इन प्रश्नों पर गम्भीर विमर्श तो किया ही जाना चाहिए। वस्तुतः हमारी शिक्षा ऐसी हो जिससे हमें बिगड़ते पर्यावरण का समाधान मिल सके, टूटते सामाजिक ताने-बाने की तुरपाई हो सके, वैज्ञानिक बल भी उन्नत हो सके, यांत्रिक उत्कृष्टता के शिखर पर तो पहुँचें पर संवेदनाओं के सहज सरोवर में भी अवगाहन कर सकें। व्यक्ति में सर्वोच्च पद, प्रतिष्ठा और सम्मान प्राप्त करने की अभिलाषा तो जगे किन्तु अंतिम छोर पर खड़े वंचित और शोषित के प्रति भी करूणा, आदर और दायित्व बोध की भावना पनप सके। समग्र रूप से यदि मैं कहूँ तो हमारी शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो जो जीवन जीने की कला सिखाए। मैं आश्वस्त हूँ कि नयी शिक्षा नीति के मसौदे में इन सब तथ्यों को किसी न किसी रूप में समाविष्ट किया गया होगा। यकीनन हम शिक्षा के नये कल की ओर बढ़ रहे हैं।

'सृजन' के इस अंक के प्रकाशन में महाविद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षक साथियों एवं कर्मचारी बन्धुओं का मुझे भरपूर सहयोग मिला है। अपनी तमाम व्यस्तताओं के बावजूद महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. संजय वाते जी का मुझे रचनात्मक मार्गदर्शन मिलता रहा। मैं आप सबके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मैं महाविद्यालय के सभी युवा विद्यार्थियों को अपनी समस्त हार्दिक शुभेच्छाएँ प्रेषित करते हुए सृजन के तेरहवें अंक को इस विश्वास के साथ आपके हाथों में सौंप रहा हूँ कि सृजनशीलता का यह संस्कार हमारे युवाओं को प्रेरित करता रहेगा।

डॉ. सी.एल.शर्मा

सम्पादक

स्वामी विवेकानन्द कॅरियर मार्गदर्शन योजना

प्रो. दिनेश बोरासी
ट्रेनिंग एवं प्लेसमेंट अधिकारी

डॉ. स्वाति पाठक
प्रभारी अधिकारी

महाविद्यालय में विद्यार्थियों को स्वरोजगार हेतु प्रेरित करने, रोजगार प्राप्ति में सहायता देने, व्यक्तित्व विकास तथा मार्गदर्शन हेतु स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन योजना संचालित की जा रही है। म.प्र. शासन के उद्देश्यों के अनुरूप, उच्च शिक्षा विभाग द्वारा संचालित इस महती योजना के क्रियान्वयन हेतु गठित प्रकोष्ठ द्वारा शासन के दिशा दर्शन के अनुसार संपूर्ण सत्र में विद्यार्थियों के हितार्थ विभिन्न गतिविधियाँ संचालित की जाती हैं। विद्यार्थियों को विभिन्न उद्योगपतियों एवं विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रेरक एवं तथ्यपरक व्याख्यान के माध्यम से जानकारी प्रदान की जाती है। विद्यार्थी अपनी जिज्ञासाओं का समाधान करते हैं तथा उद्यमिता संबंधी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करते हैं। उन्हें बाजार, मांग, पूर्ति, माल की उपलब्धता, शासन की विभिन्न योजनाएं, ऋण, सबसिडी, प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाना आदि से अवगत कराया जाता है। सत्र 2019-20 में मासिक नियमित गतिविधि के अन्तर्गत विषय विशेषज्ञ डॉ. सी.एल.शर्मा, सूबेदार मेजर बिसन सिंह, प्रो. पद्मा भांभरा, श्री अनिल पाटीदार, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. डॉली मेहरा, सेडमेप जिला प्रबंधक श्री विजय चौरे, कर्णावती विश्व विद्यालय गुजरात के कॅरियर काउंसलर अजय अभिषेक, श्रीमती पार्वती पंवार, श्री नीलेश जैन ने विद्यार्थियों को सेना में कॅरियर, कौशल विकास, सौंदर्य के क्षेत्र में स्वावलम्बन, सफलता के सूत्र, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी, कॅरियर अवेयरनेस जैसे विषयों पर मार्गदर्शन दिया, इसी सत्र में 25 से 30 दिवसीय दो अल्पावधि रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण भी आयोजित किए गये जिसमें 100 विद्यार्थियों को फास्ट फूड एवं ब्यूटी सलून का प्रशिक्षण दिया गया। औद्योगिक भ्रमण के अन्तर्गत 29/1/2020 को प्राणिकी विभाग द्वारा 30 विद्यार्थियों को मछली पालन केन्द्र, धोलावाड़ तथा कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ द्वारा 80 विद्यार्थियों को दैनिक भास्कर प्रिंटिंग प्रेस जावरा का भ्रमण कराया गया।

आई.आई.टी. मुम्बई के सहयोग से सोलर लैम्प निर्माण कार्यशाला में भाग लेकर महाविद्यालय के 50 विद्यार्थी विश्व रिकार्ड में सम्मिलित हुए। महाविद्यालय में चरखा क्लब का गठन भी किया गया है, जिसका उद्घाटन श्री जीतू पटवारी उच्च शिक्षा मंत्री के कर कमलों द्वारा किया गया है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को खादी के प्रति रुचि जागृत करने एवं भविष्य में इसे स्वरोजगार के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

कैम्पस प्लेसमेंट के अन्तर्गत रिलायंस जियो ने ऑनलाइन टेस्ट के माध्यम से महाविद्यालय के 108 विद्यार्थियों का पार्ट टाइम जॉब के लिए सलेक्सन किया। 31 जनवरी 2019 एवं 1 फरवरी 2020 को आयोजित कॅरियर अवसर मेले में 15 कम्पनियों ने 1286 पंजीकृत विद्यार्थियों में से 434 विद्यार्थियों का चयन प्लेसमेंट हेतु किया।

स्वामी विवेकानन्द कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ द्वारा रतलाम जिला प्रशासन के सहयोग से जिले के समस्त विद्यार्थियों हेतु निःशुल्क रूप से यू.पी.एस.सी. एवं पी.एस.सी. परीक्षाओं हेतु प्रशिक्षण आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम की संरक्षक जिलाधीश श्रीमती रूचिका चौहान है एवं नोडल अधिकारी डॉ. संजय वाते हैं, समन्वयक डॉ. स्वाति पाठक है। इसके अन्तर्गत 2051 प्रशिक्षणार्थियों का पंजीयन किया गया है। फैकल्टी के रूप में जिलाधीश श्रीमती रुचिका चौहान, पुलिस अधीक्षक श्री गौरव तिवारी, आई.ए.एस. सुश्री तपस्या परिहार, कौटिल्य एकेडेमी के श्री मो. दानिश मेनन, श्री जितेन्द्र लोधी, विश्वास एकेडेमी के श्री रविशंकर दलोदिया, एम्पल एकेडेमी की श्री अनिता पाटीदार ने विद्यार्थियों को मार्गदर्शन दिया।

एन.सी.सी. प्रतिवेदन सत्र – 2019–20

दिनांक 07 जुलाई 2019 को हरियाली महोत्सव के अंतर्गत जिला प्रशासन के सहयोग से रतलाम नगर के शांति नगर, विक्रम नगर क्षेत्र में पौधारोपण कार्यक्रम में भागीदारी की गयी। 17 जुलाई 2019 को 'मेरी धरती मेरा कर्तव्य' के अंतर्गत शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय के एन.सी.सी. कैडेट्स द्वारा 21 म.प्र. बटालियन एन.सी.सी. के निर्देशन में तथा वन विभाग के सहयोग से रतलाम से 14 कि.मी. दूर सांवलियारूंडी क्षेत्र में लगभग 250 पौधों को रोपा गया। इस हेतु कैडेट्स अपनी साईकल पर पर्यावरण जागरूकता के नारे लिखी तख्तियाँ बांधकर साईकल रैली से पहुँचे। 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस मनाया गया। सत्र 2019-20 में 05 अगस्त 2019 को 37 एस.डी. व 21 एम. डब्लू. कैडेट्स की भर्ती की गयी। 15 अगस्त 2019 को स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में एस.डी., एस.डब्लू. कैडेट्स ने पुलिस लाइन प्रांगण में परेड में भागीदारी की। सितम्बर माह में स्वच्छ भारत अभियान हेतु स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत महाविद्यालय परिसर में प्राणिकी विभाग के सामने सफाई कर स्वच्छता का संदेश महाविद्यालय के अन्य छात्रों को दिया। एन.सी.सी. डे के उपलक्ष्य में एन.सी.सी. कैडेट्स ने शासकीय जिला चिकित्सालय रतलाम के ब्लड बैंक में जाकर 22 यूनिट रक्तदान किया तत्पश्चात् वृद्ध आश्रम जाकर वृद्ध जनों की समस्या जानी और फल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त कया। जनवरी माह के प्रथम सप्ताह में यातायात नियंत्रण एवं जागरूकता सप्ताह मनाया जाता है जिसमें महाविद्यालय के कैडेट्स द्वारा सैलाना बस स्टैंड पर गुलाब का फूल देकर हेलमेट पहनने एवं यातायात नियमों का पालन करने संबंधी समझाइश वाहनचालकों को दी गयी तथा कैडेट्स के द्वारा यातायात नियंत्रण किया गया। युवा व विश्व जल दिवस के उपलक्ष्य में बटालियन के द्वारा रैली का आयोजन किया गया जहाँ महाविद्यालय के कैडेट्स ने भागीदारी की। स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत ग्राम गोद धौंसवास में शासकीय प्राथमिक स्कूल में 10 पौधों का रोपण कर पर्यावरण जागरूकता के साथ स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के लिए रैली निकाली गई। 3 दिसम्बर को अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस पर दो बत्ती, माणक चौक, नगर निगम, रेलवे स्टेशन पर नुक्कड़ नाटक के माध्यम से दिव्यांगों के प्रति जनता को जागरूक किया। 26 जनवरी 2018 को गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में एस.डी., एस.डब्लू. कैडेट्स पुलिस लाइन प्रांगन में परेड में भागीदारी की गयी जिसमें एस.डब्लू. कैडेट्स ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

एन.सी.सी. की होनहार छात्रा उमा पंवार को सत्र 2018-19 में 21, म.प्र. एन.सी.सी. बटालियन रतलाम की सर्वश्रेष्ठ एन.सी.सी. कैडेट का पुरस्कार एन.सी.सी. मुख्यालय इंदौर द्वारा प्रदान किया गया जिसमें कैडेट को रू 3000 का नगद पुरस्कार दिया गया।

एडवांस लीडरशिप कैंप, आर्मी अटैचमेंट कैंप, गणतंत्र दिवस परेड हेतु लॉन्चिंग कैंप, बेलगाम (कर्नाटक) में ट्रैकिंग कैंप, राष्ट्रीय एकता शिविर महू, सी.ए.टी.सी., राष्ट्रीय शूटिंग चैम्पियनशिप हेतु कैंप, थल सेना कैंप इंदौर, सी.ए.सी.टी. रतलाम, इंदौर में महाविद्यालय कैडेट्स के द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया।

'बी' एवं 'सी' प्रमाण पत्र परीक्षा हेतु महाविद्यालय में एन.सी.सी. पाठ्यक्रम के अनुसार परमानेंट इंस्ट्रक्टर के द्वारा अध्यापन कार्य करवाया गया एवं शस्त्र प्रशिक्षण भी दिया गया।

प्रो.आर.एस.जामोद

एन.सी.सी.अधिकारी

राष्ट्रीय सेवा योजना विशेष शिविर प्रतिवेदन

डॉ. धीरेन्द्र केरवाल
कार्यक्रम अधिकारी

डॉ. गोपाल खराड़ी
कार्यक्रम अधिकारी

शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रतलाम की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाइयों का विशेष शिविर ग्राम धामनोद में दिनांक 3 फरवरी से 9 फरवरी 2020 तक आयोजित किया गया।

शिविर के प्रथम दिन स्वयं सेवको ने परिसर को साफ किया। बौद्धिक सत्र में डॉ. गोपाल सिंह खराड़ी ने स्वयं सेवकों को राष्ट्रीय सेवा योजना के बारे में जानकारी प्रदान की। डॉ. धीरेन्द्र केरवाल ने सोशल मीडिया विषय पर स्वयं सेवकों से संवाद किया।

दिनांक 04 फरवरी को शिविर का औपचारिक उद्घाटन हुआ। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ.पी.सी.पाटीदार ने की। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ.एम.एल.बडगोत्या थे। विशेष अतिथि के रूप में नगर परिषद उपाध्यक्ष श्री रेवाशंकर राव उपस्थित थे।

शिविर के बौद्धिक सत्र के दौरान विभिन्न विषयों पर विद्वत् जनों के व्याख्यान आयोजित हुए। डॉ.आर.पी.पाटीदार ने समय प्रबंधन व व्यक्तित्व विकास विषय पर अपना उद्बोधन दिया। लोकस्वास्थ यांत्रिकी विभाग के जिला सलाहकार श्री आनंद व्यास ने जल संरक्षण पर संवाद किया।

महिला एवं बाल विकास विभाग की पर्यविक्षक प्रेरणा तोगड़े ने पोषण आहार के बारे में स्वयं सेवकों को बताया। भावना अरोड़ा ने बाल श्रम व बच्चों के अधिकार के बारे में जानकारी प्रदान की।

मोटीवेशनल स्पीकर शुभम मन्दसौरकर ने टाईम मौनेजमेंट, कम्युनिकेशन स्किल, कॅरियर को लेकर स्वयं सेवकों की जिज्ञासा का समाधान किया।

जिला चिकित्सालय रतलाम के अपूर्व शर्मा ने एड्स अवेयरनेस पर स्वयं सेवकों को संबोधित किया। श्री घनश्याम शर्मा ने टी.बी. के लक्षणों व उपचार पर प्रकाश डाला।

परियोजना कार्य के अन्तर्गत स्वयं सेवकों ने माध्यमिक स्कूल परिसर, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, साई मंदिर परिसर आदि स्थानों पर स्वच्छता कार्य किया। हायर सेकेंडरी स्कूल परिसर के समतलीकरण का कार्य भी स्वयं सेवकों ने उत्साह पूर्वक सम्पन्न किया।

सामाजिक संदेशों से ओत-प्रोत नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति भी स्वयं सेवकों ने विभिन्न स्थानों पर दी। ग्राम संपर्क के दौरान स्वयं सेवकों ने रहवासियों से सम्पर्क कर स्थानीय समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। मोबाइल के माध्यम से हो रहे स्वच्छता सर्वे में सहभागिता हेतु रहवासियों को प्रेरित किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत देशभक्ति गीतों पर रंगारंग प्रस्तुति स्वयं सेवकों ने दी जिसे स्थानीय नागरिकों ने सराहा। जनजाग्रति हेतु नाटक भी प्रस्तुत किए गए।

समापन समारोह में हमारे उत्साहवर्धन हेतु डॉ.आर.के.विजय, राज्य सम्पर्क अधिकारी राष्टीय सेवा योजना, भोपाल तथा डॉ.प्रशांत पुराणिक, कार्यक्रम समन्वयक विक्रम विश्व विद्यालय, उज्जैन उपस्थित थे। हम उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

जय हिन्द!

शारीरिक शिक्षा विभाग

सत्र 2019-20 में शासकीय स्नातकोत्तर कला एवं विज्ञान महाविद्यालय से छात्र-छात्राओं ने विभिन्न स्तर पर क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग किया । जिनमें से 9 छात्राओं एवं 6 छात्रों द्वारा विश्वविद्यालय स्तर पर विक्रम विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया गया और राज्य स्तर पर उज्जैन का प्रतिनिधित्व किया गया, जिनकी सूची निम्नानुसार है -

महिला वर्ग		पुरूष वर्ग	
पूर्णिमा सिंह राठौर	शतरंज	कुलदीप जाट	कुश्ती
अदिति बौरासी	हॉकी	गौरव यादव	एथलेटिक्स
कीर्ति पाटीदार	हॉकी	तरुण पंवार	एथलेटिक्स
पूजा माली	क्रिकेट	मयूर सिंह नरूका	हॉकी
श्रेया बैरागी	टेबल-टेनिस	गौतम पथरोड़	शतरंज
शिवानी उपाध्याय	टेबल-टेनिस	अंकित थम्मार	खो-खो
राधिका खराड़ी	टेबल-टेनिस		
शेफाली बैरागी	टेबल-टेनिस		

दिनांक 14/12/2019 को देवास के साइंस कॉलेज में संभाग स्तरीय टेबल टेनिस महिला स्पर्धा में कॉलेज की चार छात्राओं श्रेया बैरागी, शेफाली बैरागी, शिवानी उपाध्याय और राधिका खराड़ी ने चैंपियनशिप हासिल की । जयपुर में अंतर विश्वविद्यालय टेबल टेनिस महिला स्पर्धा में विक्रम विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया और राज्य स्तर पर दिनांक 23/01/2020 को उज्जैन संभाग का प्रतिनिधित्व ग्वालियर में किया।

इस वर्ष दिनांक 19/12/2019 को महाविद्यालय के छात्र गौतम पथरोड़ और मयूर नरूका द्वारा राज्य स्तर पर शतरंज प्रतियोगिता में उज्जैन संभाग का प्रतिनिधित्व किया गया एवं अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में विक्रम विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया गया।

दिनांक 28/09/2019 को भगत सिंह शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय जावरा में जिला स्तरीय महिला वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय की छात्राओं ऋचा शर्मा, पार्वती मोहनिया, साक्षी यादव और मनीषा व्यास का चयन संभाग स्तरीय प्रतियोगिता के लिए रतलाम जिला दल में हुआ जिसका आयोजन दिनांक 16/10/2019 को शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय उज्जैन में हुआ।

कुश्ती प्रतियोगिता में महाविद्यालय के छात्र कुलदीप जाट द्वारा सम्भाग का प्रतिनिधित्व किया गया।

महाविद्यालय की छात्रा अदिति बौरासी एवं कीर्ति पाटीदार द्वारा राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मंदसौर में दिनांक 30/11/2019 को राज्य स्तरीय हॉकी प्रतियोगिता में उज्जैन संभाग का प्रतिनिधित्व किया गया।

महाविद्यालय की छात्रा पूर्णिमा सिंह राठौर ने शतरंज प्रतियोगिता में उज्जैन संभाग का प्रतिनिधित्व राज्य स्तर पर दिनांक 19/11/2019 को शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय सागर में किया।

डॉ. रूपेन्द्र फरस्वाण
क्रीड़ा अधिकारी

अगर मैं दो बच्चों की माँ होकर एक मेडल जीत सकती हूँ,
तो आप सब भी ऐसा कर सकते हैं।
मुझे एक उदाहरण के तौर पर लें
और कभी हार ना मानें।

-मैरी कॉम

मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था - विकास हेतु नई व्यूहरचना की आवश्यकता

सन् 2000 में मध्यप्रदेश के पुनर्गठन के बाद वर्तमान मध्यप्रदेश ने आर्थिक क्षेत्र में जोरदार प्रगति की है यहाँ पर आर्थिक वृद्धि की दर में तेजी से वृद्धि हुई है जिसे यहाँ के शुद्ध घरेलू राज्य उत्पाद में तथा प्रति व्यक्ति आय में हुई वृद्धि से देखा जा सकता है। आर्थिक सिद्धान्त के अनुसार प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि को सम्पूर्ण विश्व में विकास का बेहतर मापक माना जाता है। प्रति व्यक्ति आय में तेज वृद्धि दर ज्यादा प्रगति का द्योतक है। क्योंकि प्रति व्यक्ति आय में 2 % प्रति वर्ष वृद्धि होने पर इसको दुगुना होने में 35 वर्षों का समय लग जाता है जबकि प्रति व्यक्ति आय यदि 10% प्रति वर्ष से वृद्धि हो तो इसको दुगुना होने में सिर्फ 7 वर्षों का समय ही लगता है। अतः स्पष्ट है कि यदि तेजी से आर्थिक प्रगति करनी है तो प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि की दर को तेज करना होगा। अर्थव्यवस्था के तीनों क्षेत्रों की यथा प्राथमिक, द्वितीयक तथा सेवा की समेकित वृद्धि के रूप में राज्य की आय में वृद्धि देखी जाती है। सत्र 2004 से मध्यप्रदेश की प्राथमिक क्षेत्र विशेषतः कृषि क्षेत्र में तेज गति से प्रगति हुई है और यह प्रगति की दर सन् 2010 के बाद चामत्कारिक रूप से और तेजी से बढ़ी है। जिसके कारण पिछले कई वर्षों से मध्यप्रदेश को कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के कारण अखिल भारतीय स्तर पर कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। आज मध्यप्रदेश में 5 करोड़ टन खाद्यान्नों का उत्पादन हो रहा है जो कि स्वतंत्रता के समय भारत के कुल खाद्यान्नों के बराबर है, यानी भारत में जो खाद्यान्नों का उत्पादन स्वतंत्रता के समय हो रहा था आज वह उत्पादन अकेले मध्यप्रदेश में ही हो रहा है। यद्यपि इतनी वृद्धि के बावजूद सापेक्षित वृद्धि के रूप में देखें तो अखिल भारतीय स्तर पर मध्यप्रदेश के स्थान में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं आया है। फिर भी राज्यों के बीच सापेक्षिक असमानता में कमी आयी है। कृषि क्षेत्र में वृद्धि के बाद अब मध्यप्रदेश में औद्योगिक क्षेत्र के विस्तार में ध्यान देना होगा और वह भी विनिर्माण क्षेत्र में विशेष रूप से। क्योंकि कृषि पर आधारित विकास सतत् एवं सन्तुलित नहीं हो सकता, जिसका हमने भारत में ही पंजाब के उदाहरण के रूप में देखा है। अत्यधिक कृषि पर जोर देने की वजह से वहाँ की भूमि की उर्वरा शक्ति कम होती जा रही है एवं साथ ही राज्य में औद्योगिक विकास पर पर्याप्त जोर न देने के कारण वहाँ का विकास संतुलित नहीं हो पाया है। हमें अब विनिर्माण क्षेत्र के योगदान में वृद्धि करनी होगी। इस हेतु वृद्धि के पश्चगामी अनुबंध यहाँ पर पर्याप्त रूप से विकसित हो चुके हैं। जैसे कृषि विकास के साथ उच्च क्रय शक्ति क्षमता, आधारभूत ढ़ाँचा यथा सड़कें, पानी, बिजली एवं बैंकों की उपलब्धता। अतः विनिर्माण क्षेत्रों को विकसित कर यहाँ के व्यापारिक क्षेत्रों का विस्तार किया जाना चाहिए। विनिर्माण क्षेत्र का विस्तार व्यापक पैमाने पर होना चाहिए ताकि पैमाने की मितव्ययिताएँ प्राप्त की जा सकें जिससे भारत के मध्य में स्थिर होने के कारण न केवल अन्तरराज्यीय व्यापार में वृद्धि हो बल्कि निर्यात व्यापार में भी वृद्धि की जानी चाहिए। ताकि प्रदेश में विदेशी पूंजी एवं नयी प्रौद्योगिकी का आगमन और विस्तार हो सके। ताकि अधिक उत्पादन नयी तकनीक के साथ अधिक कुशलता से किया जा सके एवं वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अपने को स्थापित रख सके। आर्थिक इतिहास की विवेचना करने पर स्पष्ट होता है कि वही देश ज्यादा तेज प्रगति कर सका है जिसने कृषि विकास पर पर्याप्त ध्यान देने के बाद औद्योगिक क्षेत्र का विस्तार कर व्यापार के माध्यम से अपना निर्यात बढ़ा कर विदेशी पूंजी अर्जित की है। आधुनिक तकनीक हासिल कर जापान, जर्मनी एवं पूर्वी एशियाई देश इस तरह की प्रगति के उदाहरण हैं। अतः समय रहते मध्यप्रदेश को अपना विकास मॉडल कृषि क्षेत्र के विकास से परिवर्तित कर विनिर्माण क्षेत्र आधारित करना चाहिए ताकि विकास दीर्घकालीन एवं संतुलित हो सके। भारत के आर्थिक सर्वेक्षण में भी पहली बार राज्य स्तर पर आयात निर्यात स्तर के आकड़ों को समाहित कर इस तथ्य के संकेत दे दिए हैं कि भविष्य में राज्यों की प्रगति निर्यात आधारित विकास एवं नयी तकनीक से ही संभव है।

डॉ. विनोद कुमार शर्मा
प्राध्यापक - अर्थशास्त्र

मेरी अंडमान यात्रा

बचपन से पढ़ा था, कि गुलामी के दौर में अंग्रेज स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को काले पानी की सजा के लिये अंडमान - निकोबार भेज देते थे। भूगोल के विद्यार्थी होने के नाते मुझे यहाँ की स्थिति ज्ञात थी, परन्तु कल्पना नहीं की थी कि कभी वहाँ जाना हो पाएगा। अचानक जाने का संयोग प्राप्त हुआ तो प्रसन्नता और रोमांच अनुभव हुआ।

अंडमान निकोबार बंगाल की खाड़ी में स्थित भारत का एक केन्द्र शासित प्रदेश है। यहाँ दो बड़े द्वीप अंडमान और निकोबार सहित 572 द्वीपों का समूह है। इसके 80% भाग पर वन हैं।

हमारी इंदौर से चेन्नई और चेन्नई से पोर्ट ब्लेयर की उड़ान थी। प्रातः 5.00 बजे चेन्नई से पोर्ट ब्लेयर के लिये रवाना हुए। चूंकि सागर के ऊपर से उड़ान थी अतः बादल दिखायी दे रहे थे परन्तु धरती पर उतरते समय सुबह 7.00 बजे नारियल,सुपारी एवं अन्य वृक्षों की सघन हरियाली और पहाड़ियों की ढलान पर कहीं-कहीं ढलवाँ छत के मकान के मनोरम दृश्य ने मन को प्रफुल्लित कर दिया।

होटल पहुँच कर कुछ विश्राम के बाद हम भ्रमण हेतु सर्वप्रथम सेलुलर जेल पहुँचे। साफ सुथरी चौड़ी सड़क पर एक ओर व्यवस्थित उद्यान और दूसरी ओर विशालकाय प्रवेश द्वार दिखाई दिया, जिस पर राष्ट्रीय स्मारक लिखा था। टिकट लेकर अन्दर प्रवेश करने पर दायें और बायें दोनों तरफ बड़े-बड़े हाल दिखे। यहाँ सेलुलर जेल का इतिहास और वहाँ रहे कैदियों के बारे में जानकारियाँ प्रदर्शित थीं।

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद अंग्रेजों को ऐसे स्थान की आवश्यकता अनुभव हुई, जहाँ वह उम्र कैद वाले कैदियों को रख सकें। यह स्थान उन्हें इसलिये उपयुक्त लगा कि मुख्य भूमि से चारों ओर कम से कम 1000 कि.मी. दूर है। अतः भागने की सम्भावना नहीं है। पानी से घिरा होने के कारण ही इसे काला पानी कहा गया। सर्व प्रथम खुली जेल के रूप में था क्योंकि उस समय विपरीत जलवायु, जीवनयापन की कठिनाई और परिवार, समाज से दूरी के कारण कैदी जल्दी ही मर जाते थे। कुछ समय बाद उन्हें लगा कि विद्रोह को दबाने के लिये यातनाएँ देना जरूरी है, अतः यह जेल 1896 में बनना शुरू हुई और 1906 में बनकर तैयार हुई, इसमें 698 कोठरियाँ या सेल थीं इसके कारण इसे सेलुलर जेल कहा गया।

मुख्य द्वार से अन्दर जाने पर खुले स्थान से दैत्याकार भवन दिखायी दिया। कोठरियों की तीन मंजिला श्रृंखलाएँ, दायें तरफ की कोठरियों के द्वार हमारी तरफ, बायें ओर की कोठरियों के पिछले भाग का एक-एक रोशनदान दिखायी दे रहे थे। बीच में विशालकाय शेड के नीचे यातनागृह और अंत में फाँसी घर था। मैंने कोठरियाँ गिननी चाही एक मंजिल पर लगभग 35 कोठरियाँ थी। कोठरियों की दोनों श्रृंखलाएँ एक गोलाकार वॉच टॉवर पर मिल रही थी। प्रदर्शनी से पता चल गया था कि बीच में वाच टावर और वहाँ से चक्र के आरे के समान कोठरियों की सात श्रृंखलाएँ बनायी गयी थीं। एक श्रृंखला के द्वार से दूसरी श्रृंखला का पिछला भाग दिखायी देता था, ताकि हर कैदी को कोई दूसरा कैदी दिखायी न दे और वॉच टावर से सब पर निगरानी रखी जा सके। वर्तमान में तीन श्रृंखलाएँ विद्यमान हैं। अन्य ध्वस्त हो चुकी हैं।

वॉच टावर पर पहुँच कर देखा, प्रत्येक मंजिल से तीन श्रृंखलाएँ दिखाई दे रही थीं ऊपर चढ़ने पर समुद्रतट का सुन्दर नजारा दिखाई दे रहा था। दूसरी मंजिल पर अंतिम कोठरी में विनायक दामोदर सावरकर ने ग्यारह वर्ष सजा काटी। यहाँ उनका चित्र लगा है। सभी दर्शनार्थियों की तरह हमने भी जूते उतार कर अन्दर प्रवेश करके श्रद्धा भाव से सावरकर जी को नमन किया।

इनके अतिरिक्त यहाँ बटुकेश्वर दत्त, सोहनसिंह, दीवानसिंह, गोपाल भाई, मौलाना एहमदुल्ला, योगेन्द्र शुक्ला आदि कैदी के रूप में रहे थे।

यहाँ हॉल में कैदियों द्वारा कोल्हू से तेल निकलवाने, कैदियों को हथकड़ियों, बेड़ियों में जकड़ने तथा बांध कर कोड़े मारने के तरीके मॉडल द्वारा प्रदर्शित हैं। कैदियों को पहनने के टाट के कपड़े भी प्रदर्शित हैं। इसके बाद फाँसी घर देख कर मन उद्वेलित हो उठा। जाने कितने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी,

यहाँ असमय काल के गाल में समाये होंगे।

पुनः सेलुलर जेल आकर लाइट एन्ड साउन्ड शो देखा। यहाँ जेल प्रांगण में शाम को एक-एक घण्टे के तीन शो चलते हैं, जिसमें ध्वनि, प्रकाश द्वारा जेल का परिचय, इतिहास तथा अन्य जानकारियाँ दी जाती हैं। इसमें पर्यटकों की भीड़ आती है। अपने पूर्वज देशवासियों द्वारा झेली यातनाओं की कल्पना करके मन भारी हुआ, परन्तु यह सोचकर संतोष भी हुआ, कि दमन कारी अब चले गए हैं। हम स्वतंत्र हैं और इस जेल को मरम्मत, पुताई तथा सुसज्जित करके राष्ट्रीय स्मारक का रूप दे दिया गया है। 1979 में तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई द्वारा इसे राष्ट्र को अर्पण किया गया है।

अगले दिन प्रातः नौका द्वारा पांच कि.मी. दूर रॉस द्वीप गए, यहाँ अंग्रेज अधिकारियों के आवास तथा कार्यालय रहे होंगे। यहाँ चर्च, क्लब हाऊस, प्रिंटिंग प्रेस, सचिवालय, बाजार, हॉस्पिटल, बेकरी, वाटर ट्रीटमेंट प्लांट इत्यादि के खण्डहर हैं। सभी के बाहर उनके पूर्व के फोटो लगे हैं। अभी यह स्थान प्राकृतिक सौंदर्य एवं स्वच्छंद विचरण करते हिरणों के लिए प्रसिद्ध है।

दोपहर को नौका द्वारा नॉर्थ द्वीप गए, यहाँ की खाड़ी कोरल और रंगबिरंगी मछलियों के लिए विख्यात है। मैंने यहाँ सीवॉक का आनन्द लिया। इसमें समुद्र के अन्दर 50-60 फीट नीचे गोता लगा कर मछलियाँ तथा कोरल देखते हैं। यहाँ स्कूबा डायविंग और ग्लॉस बॉटम बोट द्वारा भी इसको देखा जा सकता है।

तीसरे दिन प्रातः भारतीय जहाज रानी निगम की फेयरी (बड़े आकार की नाव) द्वारा 56 कि.मी. दूर हेवलोक द्वीप गए। यहाँ एक रिसोर्ट में रुके और शाम को विश्व प्रसिद्ध राधा नगर बीच देखा, जो नीले सागर, सफेद रेत और घनी हरियाली के कारण विख्यात है।

चौथे दिन प्रातः हेवलोक से पुनः पोर्ट ब्लेयर आए। शाम को चिड़िया टापू गए, यह समुद्र तट विभिन्न प्रकार की चिड़ियाओं तथा मगरमच्छों के लिए प्रसिद्ध है।

पाँचवें दिन प्रातः एन्थ्रपोलॉजिकल म्यूजियम, जहाँ मानव जीवन तथा एक्वेरियम मछलियाँ, कोरल, शंख, सीप तथा मोती प्रदर्शित हैं, देखे।

इसी दिन दोपर 12.00 बजे हमारी वापसी की उड़ान थी अतः 11.00 बजे एयरपोर्ट पहुँचे। बोर्ड पर नजर गयी, देखा वीर सावरकर अंतराष्ट्रीय विमानतल, पोर्टब्लेयर। संतोष हुआ कि वीर सावरकर के बलिदान को सम्मान तो मिला। विचार चल रहे थे, आश्चर्य और प्रसन्नता हो रही थी कि काले पानी के लिये विख्यात स्थान अब हरियाली और रोमांचक खेलों के कारण नवदम्पत्तियों के लिये उनकी पहली पंसद है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यहाँ की यात्रा में हेवलोक द्वीप का स्वराज द्वीप, नील द्वीप का शहीद द्वीप तथा रॉस द्वीप का सुभाषचन्द्र बोस द्वीप नामकरण करके भारतीयों का गौरव बढ़ाया है।

डॉ. मायारानी देवड़ा
सह-प्राध्यापक भूगोल

माँ बाप का प्यार

मंदिर में वो भगवान हैं, जिन्हे मनुष्य ने बनाया है।
घर में वो माँ बाप हैं, जिन्होंने हमें बनाया है॥
माँ एक ऐसी बैंक है, जहाँ आप हर भावना, दुःख जमा कर सकते हैं।
और पापा एक ऐसा क्रेडिट कार्ड हैं, जिसके पास बैलेंस न होते हुए भी
सपने पूरे करने की कोशिश करते हैं।
मम्मी पापा ने तो ज़िन्दगी दी है, अब बारी हमारी है,
ज़िन्दगी में कुछ कर के बताने की।
माता-पिता के चरणों में ही स्वर्ग है॥

सुनिता डामर
बी.एससी. द्वितीय वर्ष

छत्रपति शिवाजी का व्यक्तित्व, चरित्र और नेतृत्व

सरदेसाई के अनुसार शिवाजी का जन्म वैसाख सुदी द्वितीया, शक संवत 1549, तदनुसार दिनांक 6 अप्रेल 1627 को हुआ था। यह मत चिटनिस की 'बखर' पर आधारित है। इस समय शाहजी अत्यन्त संकटापन्न स्थिति में थे, इसलिए उन्होंने अपनी पत्नी जीजाबाई को सुरक्षा के लिए शिवनेर के दुर्ग में रख दिया था। ऐसा भी कहा जाता है कि शिवनेरी दुर्ग की अधिष्ठात्री देवी के नाम पर जीजाबाई के इस बालक का नाम शिवाजी रखा गया। जीजाबाई ने अपने गर्भस्थ बालक की कुशलता के लिए स्थानीय शिवा देवी से प्रार्थना की थी, इसलिए उन्होंने बालक का नाम उस देवी के नाम पर शिवाजी रख दिया। शिवाजी का बाल्यकाल और शिक्षा ने शिवाजी के चिरित्र और उद्देश्यों को प्रभावित किया।

जदुनाथ सरकार, सरदेसाई तथा अन्य भारतीय इतिहासकारों ने शिवाजी का मूल्यांकन एक महान पुरूष, न्यायप्रिय, प्रजावत्सल शासक और राष्ट्रनिर्माता के रूप में किया है। शिवाजी इकहरे बदन के, छोटे कद के, परन्तु शारीरिक दृष्टि से अत्यधिक चुस्त थे। शिवाजी का शरीर सौष्ठव इतना आकर्षक और आकृति इतनी ओजस्वी एवं प्रभावोत्पादक थी कि उनके सेवक और सहयोगी तथा अनुयायी और अधिकारी शिवाजी को विशेष दैवीय शक्ति सम्पन्न समझते थे।

शिवाजी के मन में उनके माता-पिता के प्रति अनन्य प्रेम और श्रद्धा थी। यद्यपि उनको अपने पिता शाहजी के पास दीर्घ समय तक रहने का अवसर नहीं मिला, फिर भी उनके प्रति शिवाजी बड़ी श्रद्धा और सम्मान रखते थे। शाहजी के बन्दी हो जाने पर वे अधिक खिन्न रहे और उनको मुक्त कराने में उन्होंने खूब प्रयास किया। शिवाजी अपनी माता जीजाबाई के भी बड़े भक्त थे। जीजाबाई के प्रति उनकी मातृ-भक्ति श्रद्धा और आज्ञाकारिता उनको एक आदर्श पुत्र प्रमाणित करती है। शिवाजी के चरित्र निर्माण में जीजाबाई का बड़ा हाथ था। उस युग में विलासिता, भावात्मक कामुकता और इन्द्रियलोलुपता के वातावरण से अप्रभावित होकर उन्होंने अपनी पत्नियों को असीम प्रेम दिया। उनका दाम्पत्य प्रेम हिन्दू आदर्शों के अनुरूप था। उनके आठ विवाह हुए थे, पर कोई भी पारिवारिक संघर्ष नहीं था। वे अपनी प्रजा की बहू-बेटियों को ही नहीं, अपितु शत्रु की बहु-बेटियों को भी अपनी बहू-बेटियाँ मानते थे। वे अपने पुत्र-पुत्रियों के प्रति भी बड़े उदार और वात्सल्यमय थे।

शिवाजी अत्यधिक धर्मनिष्ठ थे। धार्मिक सिद्धान्तों, ग्रन्थों, पुराणों और महाकाव्य की गाथाओं से शिवाजी ने प्रेरणा ग्रहण की। धर्म उनके लिये उचित आचरण, उदारता और सहिष्णुता का अनवरत स्त्रोत रहा। उनका धर्म उनको सत्कार्य में लगाने वाला था। वे भवानी के बड़े भक्त थे। उन्हों ने हिन्दू मंदिरों व पवित्र देवस्थानों के निर्माण में बड़े अ नुदान दिये। रामदास तथा उनके मठ व मन्दिर को उन्होंने भूमि व आर्थिक अनुदान दिये। अन्य धर्मों के सन्तों व फकीरों को भी उन्होंने अनुदान दिये। महाराष्ट्र के धार्मिक पुनर्जागरण का प्रभाव शिवाजी के व्यक्तित्व पर पड़ा और उन्हों ने हिन्दू धर्म और ब्राह्मणों की रक्षा का प्रबन्ध किया।

वे जन्मजात योद्धा और सैन्य संचालक थे। वे अश्वारोही कला में और तलवार से युद्ध कर शत्रु को छका देने में भी दक्ष थे। अपनी सैनिक प्रतिभा व गुणों से तथा कुशल नेतृत्व से शिवाजी एक साधारण जागीरदार के पद से प्रगति करते हुए अपनी विजयों से विशाल साम्राज्य के स्वामी बन गये। उन्होंने अपनी वीरता और साहस से व्यूह रचना और रण-कौशल के आधार पर शक्तिशाली शत्रुओं को परास्त कर दिया था। अनेक युद्धों में उन्होंने साहस से अपने जीवन को संकट में डालकर विजय पायी थी। अफजलखाँ से भेंट व उसका वध, शाइस्ताखाँ पर सहसा आक्रमण, औरंगजेब जैसे चीते की माँद, आगरा से जीवन को खतरे में डालकर निकल आना, बीजापुर और औरंगजेब की सुसज्जित सेनाओं से निरन्तर संघर्ष और युद्ध उनकी सैनिक प्रतिभा, साहस, सफलता और रणकुशलता के ज्वलंत प्रमाण हैं। जदुनाथ सरकार की 'शिवाजी एण्ड हिज टाइम्स' के अनुसार, औरंगजेब लगभग 19 वर्षों तक शिवाजी के विरूद्ध सेनाएं भेजता रहा, पर वह सफल नहीं हुआ।

मराठों के उत्कर्ष का बड़ा भारी श्रेय शिवाजी के बहुमुखी चुम्बकीय व्यक्तित्व, श्रेष्ठ आदर्शों को है। शिवाजी के नेतृत्व में अभूतपूर्व गुण थे और इसी से उन्होंने माराठों को एकता व संगठन में बांधा और उनमें राष्ट्र प्रेम की प्रबल भावना जाग्रत की। शिवाजी स्वयं मराठों के लिए प्रेरणा के असीम स्त्रोत थे। उन्होंने महाराष्ट्र की भौगोलिक स्थिति और मराठा सैनिकों के अनुकूल नीति अपनायी। उन्होंने अपने साधनों के अनुरूप अपनी रणनीति निर्धारित की। उन्होंने अपने उद्देश्यों के लिए राजनीति और कूटनीति दोनों ही सफलतापूर्वक अपनायी। शिवाजी के इस प्रेरणादायक नेतृत्व, व्यक्तित्व और नीतियों ने मराठा शक्ति के उदय में अभूतपूर्व योगदान दिया।

डॉ. आकाश ताहिर
सहा. प्राध्यापक (इतिहास)

अपनी क्षमताओं को पहचानिए

इस वैज्ञानिक युग में नवीन यंत्रों का आविष्कार निरंतर हो रहा है, ऐसे समय में युवा वर्ग को समुचित सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास के लिए अपनी जानकारियों को अपडेट ही नहीं करना होगा, बल्कि चहुँमुखी विकास हेतु सतत् प्रयत्नशील एवं सजग भी रहना होगा। व्यक्तित्व विकास के लिए जरूरी है कि मस्तिष्क में ज्ञान व सूचनाओं की निरन्तर आपूर्ति होती रहे, अगर आपके अन्दर तरक्की की इच्छाशक्ति हो तो प्रकृति ने आपको एक अद्भुत क्षमता से नवाजा है और वह है, जीवन भर सीखने की क्षमता। अनुभवी सफल महापुरुष कहते हैं कि हमें अपने जीवन की उन्नति के लिए विचारों की उन्नति करनी चाहिए।

इसलिये किसी ज्ञानपिपासु विद्यार्थी की भाँति सदैव अपने निर्धारित लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में कुछ इस प्रकार प्रयत्नशील रहें -

- सीखने की इच्छा विकसित करें - सीखने की कोई उम्र नहीं होती तथा कोई भी अपनी माँ के गर्भ से सीखकर नहीं आता।
- सकारात्मक दृष्टिकोण रखें - व्यक्ति को कभी भी विपरीत परिस्थितियों में भी विचारों की सकारात्मकता नहीं छोड़ना चाहिए। अपनी क्षमताओं, आदतों को बारीकी से परखकर उनकी कद्र कीजिए। अन्य व्यक्तियों के साथ परोपकार करने के अवसर प्राप्त कर सहयोग करने की भावना का विस्तार करना चाहिए।
- हर एक से सीखिए - किसी विद्वान का कहना है कि कोई भी अच्छी बात चाहे जिसने भी कही हो, अपना लीजिए, क्योंकि गोताखोर की कमजोरी से मोती के मूल्य में कमी नहीं आती। आपके पद, आयु, शिक्षा एवं रिश्ते से कहीं कमतर स्तर के व्यक्तियों से भी आपको बहुत कुछ सीखने के लिए मिल सकता है। अपने उच्च पद, प्रतिष्ठा के उच्च स्तरीय अहं को रुकावट न बनने दें।

आयुष मोहन सिंगाड़
बी.एससी. द्वितीय वर्ष

अगर सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो सबसे पहले सूरज की तरह तपना सीखो

-डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

प्राचीन संस्कृत कथा - साहित्य

कहानी का इतिहास उतना ही पुरातन है जितना कि मानव जीवन। भारत के सम्पूर्ण कथा साहित्य को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम लोक कथा के रूप में, द्वितीय नीति कथा के रूप में। नीति कथाएँ भारतीय साहित्य की अनुपम देन हैं। भारत के साथ-साथ विश्व साहित्य में भी कथा साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। नीति कथाओं की भाषाशैली अत्यन्त सरल, सुन्दर, बोधगम्य एवं प्रवाहमयी है। इन कथाओं में न तो सामासिक पदावली का प्रयोग हुआ है और न ही अलंकारों का। क्योंकि ये कथाएँ कोमलमति बालकों को नीति की शिक्षा देने के उद्देश्य से लिखी गई हैं। अतः इन्हें सभी प्रकार की क्लिष्टता से दूर रखा गया है। कथाओं का विस्तार गद्य के द्वारा किया गया है और नीति संबंधी उपदेशों को पद्य में पिरोया गया है। पशु पक्षी इन कथाओं के पात्र हैं, जो मानवीय गुणों, भावनाओं, संवेदनाओं से परिपूर्ण हैं। उनके कार्य -कलापों तथा संवादों के माध्यम से छोटे-छोटे बालकों को उपदेश देकर उन्हें राजनीति, लोक व्यवहार, सदाचार आदि का ज्ञान कराया गया है। कथनशैली अत्यन्त रोचक और मनोहर है। इन नीति कथाओं के प्रतिनिध ग्रंथ 'पञ्चतन्त्र' और 'हितोपदेश' हैं। ये प्राचीन भारतीय ग्रंथ अपनी सरसता, कथा शिल्प की श्रेष्ठता एवं मनोवैज्ञानिक तरीके से कथा को सजाने की निपुणता के कारण विदेशों में भी अत्यधिक लोकप्रिय हुए हैं। विश्व के प्रायः सभी देशों में ये कथा साहित्य अनुवाद के माध्यम से पहुँचे हैं।

संस्कृत भाषा में नीति कथाओं का प्रथम संग्रह 'पञ्चतंत्र' के रूप में प्राप्त है। इस के रचयिता आचार्य-विष्णुशर्मा हैं। ये अपनी अध्यापन शैली के लिये छात्रों में बहुत प्रसिद्ध थे। इस ग्रन्थ की रचना महलारोज्य नगर के अमरकीर्ति नामक राजा के चार मन्दबुद्धि राजकुमारों को छः मास के भीतर नीतिशास्त्र में पारंगत बनाने के लिए हुई थी। 'पञ्चतन्त्र' में पाँच तन्त्र हैं - मित्र भेद, मित्र प्राप्ति, कोकालुकीय, लब्धप्रणाश एवं अपरीक्षित कारक।

'पञ्चतंत्र' की कथाएँ विशुद्ध व्यावहारिक जीवन की कथायें हैं जिनमें प्रकृति के अच्छे और बुरे दोनों रूपों का परिचय दिया गया है। 'हितोपदेश' की रचना 'पञ्चतंत्र' के बाद उसी के आधार पर हुई है। हितकारी उपदेश होने के कारण 'हितोपदेश' के नाम से विख्यात इस ग्रन्थ के रचयिता नारायण पंडित हैं, जो बंगाल के राजा धवलचन्द्र के आश्रित कवि थे। 'हितोपदेश' के चार परिच्छेद हैं - मित्रालय, सुहृदभेद, विग्रह, संधि।

'वेतालपंचविशति' यह एक अति लोकप्रिय प्रख्यात कथा संग्रह है, जिसमें पच्चीस कहानियाँ संग्रहीत हैं। ये कथाएँ सर्वप्रथम क्षेमेन्द्र की 'वृहत्कथामञ्जरी' एवं सोमदेव की 'कथा सरित्सागर' में प्राप्त होती हैं। इन कथाओं को शिवदास ने गद्य पद्यात्मक रूप में तथा जम्भलदत्त ने गद्यात्मक रूप में निबध्य किया। इस कथा ग्रन्थ की कथाएँ अत्यंत रोचक, विस्मयजनक एवं बुद्धि बंधक हैं।

'वृहत्कथामञ्जरी' आचार्य क्षेमेन्द्र द्वारा रचित एक मनोरंजक कथा ग्रन्थ है। ये सहृदय कवि थे, जिन्होंने कश्मीर के शासक अनन्त के आश्रय में रहकर अनेक श्रेष्ठ ग्रन्थों की रचना की। 'वृहत्कथा' अत्यन्त विस्मयजनक कथाओं की एक अद्भुत रचना थी जो वर्तमान में प्राप्त नहीं है।

'कथा सरित्सागर' के रचयिता आचार्य सोमदेव थे। इस ग्रन्थ की रचना कश्मीरी राजा अनन्त की विदुषी पत्नी रानी सूर्यवती के आग्रह पर की गयी थी। इस ग्रन्थ में लगभग 24 हजार श्लोक हैं।

'शुकसप्तति' गद्य शैली में रचित 70 कथाओं का एक रोचक कथा ग्रन्थ है, जिसमें एक शुक (तोता) द्वारा कथाएँ कही गई हैं। 'शुक सप्तति' की दो वाचनिकाएँ प्राप्त होती हैं - संक्षिप्त एवं विस्तृत। विस्तृत वाचनिका के लेखक चिन्तामणि भट्ट हैं जिन्होंने सम्भवतः 12वीं शताब्दी में इस कथा ग्रन्थ की रचना की। शुक द्वारा ये कथाएँ पति के परदेश चले जाने पर अपने प्रेमी के साथ पलायन करने को उद्यत स्वामिनी को रोकने के उद्देश्य से कही गई हैं।

भारत की इन कथाओं का विश्वव्यापी प्रचार - प्रसार हुआ। कथाओं की श्रृंखलात्मकता का ऐसा उदाहरण कदाचित् विश्व साहित्य में नहीं मिलता। प्रत्येक कथा स्वतंत्र भी है और पूर्वापर कथाओं से बड़े स्वाभाविक ढ़ंग से जुड़ी हुई भी है। इस कथा साहित्य का महत्व आज भी है। लेकिन सुकुमारमति कोमलमति बालकों के लिये इस प्रकार का कथा साहित्य का सृजन होना चाहिए, जिससे कि इन कथा साहित्य के माध्यम से बालकों का चारित्रिक, बौद्धिक एवं मानसिक विकास हो सके।

डॉ. ललिता मरमट

सहायक प्राध्यापक - संस्कृत

शक्ति का सदुपयोग

हजारों प्रयत्न करने के बाद भी जब हमको सफलता प्राप्त नहीं होती है, तब हम प्रायः अपने भाग्य को कोसने लगते हैं। हम इस बात को भूल जाते हैं कि जीवन में सफल होने के लिए शक्ति, सामर्थ्य एवं क्षमता अपेक्षित है। एक वस्तु और है, वह है हमारी कार्यक्षमता अर्थात् हम अपनी सम्पूर्ण शक्तियों का सदुपयोग करते हैं अथवा नहीं। इस देव दुर्लभ मनुष्य योनि में शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक शक्तियों का अतुल एवं अक्षय भंडार है क्योंकि इसे ब्रह्मा का अंश माना जाता है।

अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि आज का मानव अनेकानेक प्रलोभनों में पड़कर अपनी अनन्त शक्तियों का दुरुपयोग एवं क्षय करता रहता है। फलस्वरूप हमारी सफलता का प्रतिशत कम हो जाता है। प्रायः यह देखा गया है कि आज की युवा पीढ़ी विद्यालय एवं महाविद्यालयों में अध्ययन कम करती है, समूह में बैठकर गप्पें मारना, मोबाईल पर व्यस्त रहना, परस्पर विचार विनिमय आदि ज्यादा करती हैं। इसमें से परस्पर विचारों के अदान-प्रदान से कुछ हासिल हो सकता है, पर गप्पें मारने से क्या हासिल ? विचारणीय है।

युवावस्था एवं छात्र जीवन में ऊर्जा पूर्ण उत्कर्ष पर होती है तथा शारीरिक घटक एवं साहस आत्मविश्वास से भरे होते हैं। एसे समय में हर व्यक्ति अपनी शक्तियों एवं क्षमताओं की अभिव्यक्ति एवं उनके प्रदर्शन के प्रति उत्सुक रहता है। यह उत्सुकता उसमें प्रतिस्पर्धा और आत्मविश्वास भरती है। किन्तु अति का भाव ईर्ष्या को विकसित करता है। 'अति सर्वत्र वर्जयते'। यही ईर्ष्या उसका धीरे-धीरे नैतिक और सामाजिक पतन करने लगती है।

आज के छात्र एवं छात्राओं की मानसिकता में दिनोंदिन परिवर्तन आ रहा है। जब वह छोटी कक्षाओं में पढ़ते हैं तब वह डॉक्टर, इंजीनियर, टीचर, जज, वकील आदि बनने का सपना देखते हैं। लेकिन बड़ी कक्षाओं में आते - आते अपने आत्मविश्वास एवं उद्देश्यों को खोजने लगते हैं क्योंकि उनकी शक्तियाँ एवं कार्य क्षमताएँ अन्य अनेक अनावश्यक कार्यों में क्षय होने लगती हैं और यही बातें छात्र के भविष्य को बिगाड़ने में अथवा बनाने में अपना योगदान देती हैं। इसलिए आइए आज हम अपनी शक्तियों को पहचानें और अपनी शक्ति का सदुपयोग करें। आज हम स्वतंत्र भारत के स्वतंत्र नागरिक हैं। सर्वसाधन सम्पन्न हैं। विश्व की बड़ी से बड़ी चुनौतियों का सामना करने में समर्थ हैं। बस अपने आप को पहचानें तथा अपनी आंतरिक शक्तियों को जगाएँ और उसे राष्ट्हित में लगाएँ ....

डॉ. आर.आर. रोमड़े - सहा. प्राध्यापक(प्राणिशास्त्र)

औषधि पादप उद्यान

शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय में कम्प्यूटर विज्ञान विभाग के सामने की रिक्त पड़ी 1194 वर्ग मीटर भूमि पर दिनांक 22/08/2017 को हर्बल गार्डन की आधारशिला रखी गई। इसकी स्थापना का उद्देश्य वनस्पति विभाग की स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के विद्यार्थियों को सैद्धांतिक के साथ - साथ प्रायोगिक रूप से वनस्पतियों से परिचित करवाना था। दूसरी तरफ वृक्षारोपण, पर्यावरण संरक्षण, ग्रीन कार्बन झोन, वानस्पतिक उद्यान, ग्रीन बेल्ट, Co2 न्यूनीकरण क्षेत्र आदि उद्देश्य भी पूर्ण करने थे। हर्बल गार्डन में सर्वप्रथम उबड़ - खाबड़ भूमि पर 80 ट्रेक्टर मिट्टी डलवाकर समतलीकरण करवाया गया। तत्पश्चात् गार्डन का नक्शा बनवाकर नक्शाधार पर पेवर ब्लॉक लगवाए गए। इस प्रकार बनी खाली क्यारियों में तालाब की 10 ट्रेक्टर काली मिट्टी डलवाई गई। इन क्यारियों में विभिन्न नर्सरियों एवं वनों से लाई गईं 150 जड़ी - बूटियाँ लगाई गईं। इन सभी जड़ी बूटियों की पहचान हेतु इनके समक्ष नेम प्लेट पर इनके सामान्य नाम, वनस्पतिक नाम, कुल का नाम, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक एवं यूनानी नाम भी लिखवाये गए हैं। भविष्य में रतलाम जिले के आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय के विद्यार्थी भी यहाँ

आकर अपनी पैथी की जड़ी बूटियों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। हर्बल गार्डन में अभी रिक्त पड़ी भूमि पर कई जड़ी बूटियाँ और लगाई जाना है। साथ ही जलकुंडी बनवाकर उसमें जलीय वनस्पतियाँ लगाई जाना प्रस्तावित है। हर्बल गार्डन के एक कोने को कार्बनिक खाद बनाने हेतु रिक्त छोड़ा गया है, इस स्थान पर खरपतवार, सड़े-गले पौधे, पादप अवशेष, पत्तियां एवं फूलों से केंचुआ खाद बनाने हेतु सीमेंटेड बेड्स बनाए जाना प्रस्तावित है।

इको क्लब

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार की अभिनव योजना 'राष्ट्रीय हरित कोर कार्यक्रम' के अंतर्गत वित्तपोषण संस्था पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन के अन्तर्गत महाविद्यालय में पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन संबंधी गतिविधियों का सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है। इसी तारतम्य में माह फरवरी 2019 में शा. कला व विज्ञान महाविद्यालय रतलाम में भी इको क्लब का गठन करते हुए विभिन्न संकायों/कक्षाओं के 50 छात्र -छात्राओं को सदस्य बनाया गया। इको-क्लब के सभी सदस्यों द्वारा क्लब हेतु निर्धारित वार्षिक, माहवार गतिविधियों में से नि.लि. गतिविधियाँ सफलतापूर्वक आयोजित की गयीं -

1. 21/03/19 विश्व वानिकी दिवस, 22/03/19 विश्व जल दिवस, 22/04/19 विश्व पृथ्वी दिवस, 22/05/19 विश्व जैव - विविधता दिवस एवं 05/06/19 विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर निर्धारित वार्षिक थीम पर विषय विशेषज्ञों के उद्‌बोधन हेतु कार्यक्रम आयोजित करवाए गए। इन कार्यक्रमों में मंच से विद्यार्थियों ने भी अपने विचार रखे।
2. विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ने हेतु - सदस्यों का ग्रुप भी बनाया गया। जिसमें विद्यार्थीगण प्रतिदिन पर्यावरण संरक्षण से संबंधित विविध विषयों पर कार्टून, आलेख जैसी गतिविधि करते हैं एवं सक्रिय रूप से एक - दूसरे के साथ विचारों का आदन-प्रदान भी करते हैं।
3. महाविद्यालय के हर्बल-गार्डन में 100 पौधे लगाकर महाविद्यालय में वृक्षारोपण अभियान आरंभ किया गया।
4. ग्रीष्म ऋतु में प्यासे पक्षियों हेतु 20 मिट्टी के सकोरे महाविद्यालय में रखे गए।
5. महाविद्यालय में गीले एवं सूखे कचरे के पृथक-पृथक एकत्रीकरण हेतु हरे एवं नीले कूड़ेदान विभिन्न स्थानों पर लगाए गए।
6. पक्षियों को आवास देने हेतु प्रारंभ में लकड़ी के 05 घोंसले कम्प्यूटर विभाग एवं हर्बल गार्डन में लगाए गए हैं।
7. महाविद्यालय की दीवारों पर पर्यावरण संरक्षण, वृक्षारोपण, जैव-विविधता संरक्षण, स्वच्छता, प्लास्टिक पर प्रतिबंध, धूम्रपान निषेध, तम्बाकू निषेध, खादी का उपयोग, जल संरक्षण, मोबाइल प्रतिबंध इत्यादि के बैनर लगाए गए हैं।

डॉ. दिनेश जाधव - सहायक प्राध्यापक (वनस्पति विज्ञान)

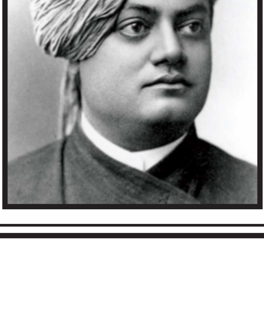

विश्व में अधिकांश लोग इसलिए
असफल हो जाते हैं, क्योंकि उनमें
समय पर साहस का संचार नहीं हो पाता।
वे भयभीत हो उठते हैं॥

--स्वामी विवेकानन्द

नियमित योग : स्वास्थ्य की कुंजी

दुनिया का हर सुख बेकार है यदि आपका स्वास्थ्य ठीक न हो। दुनिया की इस भागम-भाग में व्यक्ति के पास अपने स्वास्थ्य के लिए समय नहीं है। जब कोई बीमारी हममें घर कर लेती है तब हम उसका इलाज कराने दोड़ते हैं लेकिन यदि हम पहले से ही सतर्क हो जाएँ तो बीमारियाँ हम तक नहीं पहुँच सकती, इसका सबसे अच्छा तरीका है, हम नियमित योग करें।

योग सहज समाधि है। योग से सिर्फ शरीर ही स्वस्थ नहीं होता वरन् मन और आत्मा भी पवित्र होते हैं। योग से शरीर को साधा जाता है, लेकिन शरीर के साथ ही साथ मन भी सध जाता है। योग एक साधना है, इस साधना से जो आप पाते हैं वो अद्भुत है। इसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। ये तो सिर्फ पाने वाला ही बता सकता है कि उसने क्या पाया। योग सभी के लिए अलग होता है, क्योंकि हर व्यक्ति अलग है। इस लिए योग भी उसके लिए अलग होगा। प्रशिक्षित व्यक्ति के निर्देशन में योग करना चाहिए। योग जब किया जाता है तो सात दिन के अन्दर उसके परिणाम दिखने लगते हैं। योग करने के बाद अच्छा महसूस होने लगे, थकान कम होने लगे, मन में शक्ति महसूस हो, तो समझ जाएँ कि जो आप कर रहे हैं वो सकारात्मक है और यदि योग करने के बाद अच्छा महसूस न हो तो परिणाम विपरीत जा रहा है। पर ऐसा होता नहीं है, हमेशा परिणाम सकारात्मक की मिलते हैं। आपका अपना शरीर बता देता है कि ये आसन आपके लिए सही है या नहीं। इस लिए हमेशा योग अपनी काया के अनुसार करना चाहिए।

योग करने के लिए न तो उम्र का बंधन है और न समय का। योग किसी भी उम्र में किया जा सकता है, पर जितना जल्दी शुरू किया जाय उतना अच्छा। 15 मिनट से लेकर 2-3 घंटे तक योग किया जा सकता है। यदि नियमित रूप से 30 मिनट तक भी योग किया जाता है तो उसके भी कई लाभ मिलते हैं। योग हमेशा खाली पेट करना चाहिए। खाना खाने के बाद 4 घंटे तक योग नहीं करना चाहिए। सरल आसन से कठिन आसन की ओर धीरे-धीरे बढ़ना चाहिए। एकदम कठिन आसन नहीं करना चाहिए, वरना परिणाम विपरीत होने लगेंगे।

योग से कई बीमारियों को समाप्त किया जा सकता है। एक छोटा सा उदाहरण मैं आपको बताना चाहती हूँ- सर्वाइकल की समस्या आजकल बहुत बढ़ गई है और इसका इलाज योग में सम्भव है। सर्वाइकल एक तरह का नहीं होता है, इसका प्रभाव अलग-अलग अंगों पर दिखता है - जैसे किसी के हाथों में दर्द आता है तो किसी की गर्दन में, किसी की कमर पर तो किसी के चहरे पर तो किसी के कंधों पर, किसी के सिर में। इसे योग की क्रियाओं द्वारा दूर किया जा सकता है। मैं रोज ऐसे लोगों को देखती हूँ जो इन समस्याओं के कारण योग को अपनाते हैं और बिलकुल ठीक हो जाते हैं। समय तो लगता है पर परिणाम बेहतर होते हैं।

इसलिए नियमित योग करिए और स्वस्थ रहिए।

डॉ. भारती लुणावत

सहायक प्राध्यापक-राजनीति विज्ञान

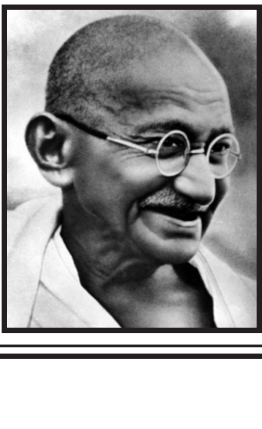

खुशी तब मिलेगी जब
आप जो सोचते हैं, जो कहते हैं और जो करते हैं,
सामंजस्य में हों।

- महात्मा गांधी

ज़िद

ज़िद क्या है ?
ज़िद इक चाह है
ज़िद एक ठानी हुई राह है
ज़िद कर लो जिद पूरी करने की
ये ज़िद ही ज़िंदगी में जीत दिलाती है
ज़िद ही सपनों को सच कर दिखाती है
ज़िद ही हमें मंजिल की राह दिखाती है
ज़िद ही मंजिल को मंजिल बनाती है
पर दोस्तों ये ज़िद की दिशा ही,
हमारी दशा भी बनाती है
और अंत में ये ज़िद हमारा
हाले हश्र सुनाती है
विवेक अपने मन में सदा ही होना चाहिए,
सही और गलत की हद हर ज़िद में होना चाहिए।

डॉ. श्वेता टेवानी
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान

कैसे भूलूँ बचपन अपना

मन गंगाजल सा निर्मल था,
डर नहीं था पाने खोने का।
माँ की गोदी में शावक सा,
जब थक कर मैं सो जाता था।
उस आँचल के नीचे मेरा,
ब्रह्माण्ड सकल हो जाता था।
अब जा कर कहाँ हँसू किलकूँ,
गलबहियाँ डाल कहाँ झूलूँ।
हर तरफ खींचीं सीमाएँ,
किसको पकड़ूँ, किसको छू लूँ।
कैसे भूलूँ बचपन अपना, अपना बचपन कैसे भूलूँ।

विशाल दड़िग
बी.एससी. तृतीय वर्ष

बरसात

बरसात जब आती है, कई चीजें लाती है। धरती को हरी चादर ओढ़ाती है।
और वातावरण को महका जाती है।
बचपन की यादें ताजा करती है, और मन को प्रफुल्लित कर देती है।
हर वर्ष लौट कर आती है, जीने का नया सबक दे जाती है।
खामोशियां मिटाने आती है, और नया जोश भर जाती है।
हताश न रह, कहकर जीने की नई उमंग दे जाती है।
वर्ष भर की थकान को मिटाकर, नई ताकत दे जाती है।
जिससे सीख लेकर मानव, जिंदगी जिए चला जाता है।
मिट्टी की सोंधी खुशबू नस नस में स्फूर्ति देती है,
पत्ते, फूलों की महक जीवन को आनंदित कर देती है।
चल उठ तुझे भी करना है, कुछ ऐसी सीख दे जाती है।
छोटे-छोटे जीव आते हैं, संघर्ष भरा जीवन जी जाते हैं।
कुछ बुरे लगते हैं कुछ प्यारे, पर बात पते की कर जाते हैं।
परिवर्तन प्रकृति का नियम है, यह गुर सिखा जाती है।
तू क्यों बैठा है कुछ कर, बदल, यह सार दे जाती है।
अंकुरण, पत्ते, फल, फूल आना पत्ते गिरना जीवन ज्ञान दे जाती है।
यह जीवन का गूढ़ रहस्य हर वर्ष बता जाती है।
बरसात जब आती है कई चीजें लाती है ......

डॉ. गोपालसिंह खराड़ी
सहायक प्राध्यापक (भूगोल)

ग़ज़ल

ज़िंदगी खर्च कर रहा है वो,
रिश्तों की डोर में सलवटें पो रहा है वो।
कदमों के निशां सहरा में टिकते नहीं,
खुद ही के साये को खो रहा है वो।
आईने के टुकड़ों में अक्स उसी के हैं ,
वज़ूद अपना इनमें तलाश रहा है वो।
बहते दरिया सी ज़िंदगी बहा दी उसने,
बारिश की बूंदों में जुम्बिश नाप रहा है वो।
चाँद खुद के दाग़ से अनजान है,
खुद ही की हाराकिरी कर रहा है वो।

गिरीं और छन्न से टूट गईं तमन्नाएँ मेरी,
दूज के चाँद सी परछाईं सिमट गई मेरी।
टपकते जज़्बातों की हकीकत कुछ थी नहीं,
कायनात के झूठे मनसूबों भरी जुम्बिश मेरी।
लहू का रंग और ये शाम-ए-आसमां,
मुसलसल है कुछ ऐसी ही कश्मकश मेरी।
पत्थर कब्र पे खड़ा याद दिलाता है,
आरजूएँ बिना जवानी के बूढ़ी हो गई मेरी।
जन्नत एक ख़्वाब है नुमायां न होगा कभी,
ज़िंदगी से अब नहीं रही कोई यारी मेरी।

डॉ. दिनेश जाधव
सहायक प्राध्यापक, वनस्पति

राष्ट्रीय कैडिट कोर : सामान्य परिचय

इस धरती में ऐसे फौलाद जन्म लेते हैं,
गुलाम भारत में भी आजाद जन्म लेते हैं।
हर बालक में क्षमता है, पूरा इतिहास बदलने की
यहाँ हिरण्यकश्यप के घर भी प्रहलाद जन्म लेते हैं।

जय हिन्द मित्रो,

मैं जयदीप सिंह डोडिया एन.सी.सी. सीनियर डिवीजन का छात्र हूँ। मैं आपको एन.सी.सी. के बारे में कुछ सामान्य जानकारी देना चाहता हूँ। जिससे कि आप अपने महाविद्यालय में एन.सी.सी. ज्वाइन करें और अपने मित्रों को एन.सी.सी. ज्वाइन करने के लिए प्रेरित करें।

शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय में एन.सी.सी. के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए महाविद्यालय के एन.सी.सी. ऑफिसर लेफ्टिनेंट राजेन्द्रसिंह जामोद सर से संपर्क कर सकते हैं।

एन.सी.सी. भारतीय सेना का एक अभिन्न अंग है। यह भारतीय सेना का एक सहायक बल है। एन.सी.सी. की टैगलाइन है- एकता और अनुशासन। यानि कि एकता दिखाते हुए अनुशासन बरतना।

एन.सी.सी. के युवाओं में चरित्र, साहचर्य, अनुशासन, नेतृत्व, धर्मनिरपेक्षता तथा निःस्वार्थ सेवा भाव का संचार होता है। एन.सी.सी. सेना में कैरियर बनाने के लिए युवाओं को प्रेरित करने हेतु उचित वातावरण बनाती है। एन.सी.सी. स्कूल और कॉलेज के छात्रों को सेना, नौसेना और वायु सेना के लिए उपयुक्त सैन्य प्रशिक्षण प्रदान करता है। यह 3 साल का एक कोर्स होता है जिसे पूरा करने पर योग्यता अनुसार सर्टिफिकेट मिलता है।

एन.सी.सी. के 'ए' सर्टिफिकेट को 5%, 'बी' सर्टिफिकेट को 8% तथा 'सी' सर्टिफिकेट को 10% तक का सशस्त्र सेनाओं में बोनस अंक प्राप्त होते हैं।

भारत में एन.सी.सी. का गठन एक कमेटी द्वारा किया गया था। जिसके हेड प. हृदयनाथ कुंजरू थे। इन्होंने सुझाव दिया था कि देश में नेशनल लेवल की सैनिक छात्र संस्था होनी चाहिए। इन्हीं के सुझाव पर आजादी के कुछ महीने बाद 16 अप्रेल 1948 को राष्ट्रीय कैडेट क्राप्स एक्ट 1948 के साथ एन.सी.सी. की स्थापना हुई।

एन.सी.सी. के लाभ - छात्रों के लिए एन.सी.सी. के कई लाभ हैं। एन.सी.सी. में शामिल होने से छात्रों को मेडिकल, उच्च शिक्षा से लेकर आर्मी की जीडी और एनडीए की लिखित परीक्षा तक में छूट मिलती है। यदि आपके शरीर में छोटी मोटी कमी है तो एनडीए मेडिकल में एन.सी.सी. सर्टिफिकेट से लाभ भी मिलता है। लेकिन आप बड़े फॉल्ट से नहीं बच सकते हैं। जैसे - घुटना आपस में नहीं सटना चाहिए। दाँतों का ज्यादा प्राब्लम ना हो, आँखों और पेरों में ज्यादा प्रॉब्लम नहीं होना चाहिए।

आज देश के 13 लाख से ज्यादा छात्र एन.सी.सी. में हैं। जबकि 1948 में यह सिर्फ 20000 के साथ शुरू हुई थी।

कैडेट जयदीप सिंह डोडिया
पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष (2017-18)

संगीत : एक अनवरत अभिव्यंजित कला

प्रकृति में विद्यमान अनहद संगीत ही उसकी आत्मा है। हमारे चारों ओर चहचहाती चिड़ियों, फड़कती तितलियों, खडबड़ाती पत्तियों, कलकल करते झरनों, खिलते हुए फूलों, टिमटिमाते हुए तारों, उफनती हुई नदियों, बलखाती प्रवाहयुक्त धाराओं के रूप में बिखरा हुआ संगीत ही है। सब प्रकृति की सुंदरता की लय में गाते और नृत्य करते प्रतीत होते हैं। इसका प्रभाव सदा ही मनोहारी तथा गहन होता है। यह एक ओर बालक को निंद्रादेवी की गोद में सुला सकता है तो दूसरी ओर यह ईर्ष्या और द्वेष को भी पराजित कर सकता है। यह मुक्ति, त्याग, प्रेम, करुणा, सहानुभूति, सद्भावना, सहयोग की भावना भी उत्पन्न कर सकता है, और इसी तरह युद्ध के समय देशभक्ति की भावनाएँ भी जागृत कर सकता है। इस प्रकार संगीत का अध्ययन और अभ्यास सदा से ही मस्तिष्क के लिए प्रेरक का कार्य करता रहा है।

संगीत का अर्थ है - गीतं, वाद्यं तथा नृत्यं प्रयं संगीत मुच्यते। अर्थात् गायन, वादन तथा नृत्य तीनों मिलकर संगीत कहलाता है। इन तीनों को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। इनका यह अद्भुत मिलन देवी सरस्वती है, जिन्हें समस्त ज्ञान और सौंदर्य का स्रोत माना गया है। ये ही प्रतिभा में प्रतीकात्मक रूप में विद्यमान है।

संगीत चाहे व्यक्तिगत हो या सामूहिक, हम इसे व्यक्तिगत गीत, वादन एवं नर्तन के साथ समूह गान, समूह वादन और समूह नर्तन में अभिव्यंजित कर सकते हैं। गीत का स्वरूप सदैव स्वतंत्र होता है तथा वादन और नृत्य इसके अनुगामी।

संगीत दो प्रकार का होता है - देशी संगीत और मार्गी संगीत। देशी संगीत लोकरंजन के लिये तथा मार्गी संगीत ईश्वर प्राप्ति के लिये। हमारे यहाँ कुछ विद्वानों ने देशी संगीत को भी लोक संगीत तथा सुगम संगीत में विभाजित कर दिया है। किन्तु वर्तमान में ये दोनों ही संगीत प्रचलन में हैं। जहाँ शास्त्रीय संगीत में रागों तथा तालों को ध्यान में रखकर तथा नियमानुसार साधना करना आवश्यक है, वहीं लोक संगीत में विभिन्न प्रकार की भाषाओं तथा लोक संस्कृति का मिश्रण है, जिसमें जन्म से लेकर मृत्यु तक के गीतों का संग्रहण है। सुगम संगीत जिसके अन्तर्गत फिल्मी गीतों, ग़ज़ल, कव्वाली तथा भजन आते हैं, सबसे अधिक प्रचलन में हैं। विद्वान संगीतकार सिर्फ तीन से पाँच मिनट की स्वर रचना में उन स्वरों को मिश्रित कर देते हैं जिसे सुनते ही हम भाव विभोर हो जाते हैं। ये सब स्वर और लय का ही जादू है, क्योंकि संगीत ही वह जादू है जिसकी धुन पर काल (सर्प) भी झूमता है।

भारत में संगीत के अनेक घराने हैं। जिसमें गुरू-शिष्य परम्परा से सीखा समझा जाता है। हिन्दुस्तान में दो प्रकार की संगीत पद्धतियाँ हैं, जिसे उत्तर भारतीय संगीत पद्धति तथा दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति के नाम से जाना जाता है। उत्तर भारतीय संगीत पद्धति के जनक पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे जी तथा दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति के जनक पंडित विष्णु दिगम्बर पुलस्कर हैं। जिनके अथक प्रयासों से संगीत महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों तक आया। जिसे शैक्षणिक संस्थाओं ने अपनी शिक्षण पद्धति में सम्मिलित कर बच्चों में उसकी रुचि को जगाया तथा जन-जन तक उसे सुगम रूप से पहुँचाया।

पुनश्च :- संगीत हमारे आसपास, हमारी प्रकृति में तथा हमारे जीवन में समाहित हो चुका है। हम किसी भी अवसर पर चाहे खुशी का हो या दुःख का, भक्ति का या उल्लास का, संगीत के बिना हम इन अवसरों की कल्पना नहीं कर सकते हैं। अतः संगीत अनवरत तथा अभिव्यंजित कला है।

लवनेश बैरागी
एम.ए. (हिन्दी साहित्य)

राष्ट्रीय एकता शिविर बैंगलूरू
20 से 27 सितम्बर 2019
माउंट कॉरमेल कॉलेज, बैंगलूरू

राष्ट्रीय सेवा योजना का सात दिवसीय राष्ट्रीय एकता शिविर बैंगलूरू (कर्नाटक) में लगाया गया। सैंट्रल युनिवर्सिटी बैंगलूरू द्वारा आयोजित इस शिविर में 10 राज्यों के स्वयं सेवकों ने सहभागिता की। जिसमें मध्यप्रदेश, हरियाणा , गुजरात, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, केरल, कर्नाटक व तमिलनाडु के स्वयं सेवक एवं स्वयंसेविकाएँ सम्मिलित हुईं। इस राष्ट्रीय एकता शिविर में शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय के छात्र शुभम पंवार ने विक्रम विश्वविद्यालय की ओर से मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व किया।

मध्यप्रदेश से कुल छः स्वयंसेवकों ने इस राष्ट्रीय एकता शिविर में सहभागिता की। जिसमें विक्रम विश्वविद्यालय से शुभम् पंवार (शासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, रतलाम) एवं सपना व्यास (शासकीय महाविद्यालय, सैलाना) व बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल से हरिकेश मौर्या (भोपाल स्कूल ऑफ सोशल साइंस) व सौम्या सिंह (नूतन कॉलेज, भोपाल) एवं ललित तायवाड़े (ज.हा.शासकीय स्नातक महाविद्यालय, बैतूल)व शुभांगी कुशवाह (सेन्ट मेरी पी.जी.कॉलेज विदिशा) ने सहभागिता की। इस शिविर में हमारे साथ विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के उत्कृष्ट विद्यालय के कार्यक्रम अधिकारी अजय श्री वास्तव सर ने भी सहभागिता की।

बैंगलूरू सैन्ट्रल युनिवर्सिटी द्वारा आयोजित यह शिविर माउंट कॉरमेल कॉलेज में लगाया गया। 21 सितम्बर को कैम्प का शुभारंभ किया गया जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. जाफत, वाईस चांसलर बैंगलूरू सैन्ट्रल यूनिवर्सिटी, डॉ. एस.आर. अर्पणा, प्रिंसिपल, माउंट कॉरमेल कॉलेज बैंगलूरू, डॉ. गणनाथ शेट्टी, स्टेट एन.एस.एस. ऑफिसर, कर्नाटक की उपस्थिति में कार्यक्रम हुआ। इस शुभारंभ कार्यक्रम में माउंट कॉरमेल कॉलेज की छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई जिसमें विभिन्न राज्यों के स्वयं सेवक उपस्थित रहे। शिविर के तीसरे दिन भारत के विभिन्न राज्यों से आए स्वयं सेवकों द्वारा अपने - अपने राज्यों की संस्कृति के नृत्य प्रस्तुत किये गये। जिसमें मध्यप्रदेश के स्वयंसेवकों ने आदिवासी नृत्य 'महुआ झरे' पर अपनी प्रस्तुति दी। शिविर के चौथे दिन गांधी भवन बैंगलूरू से विभिन्न राज्यों से आए स्वयंसेवकों ने अपनी-अपनी संस्कृति के नृत्य करते हुए रैली निकाली। इसके पश्चात् कर्नाटक राज्य स्तरीय नृत्य प्रतियोगिता आयोजित हुई, जिसमें मुख्य अतिथि कल्पना गोपालन, मुख्य सचिव कर्नाटक की उपस्थिति में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। शिविर के पाँचवें दिन नेशनल लेवल गोल्डन जुबली इंटीग्रेशन फेस्टिवल हुआ, जिसमें मध्यप्रदेश के स्वयं सेवकों ने अपनी प्रस्तुती दी। अन्तिम दो दिनों में शेषाद्रिपुरम कॉलेज द्वारा दो दिवसीय पर्यावरण वर्कशॉप आयोजित की गई, जिसमें शेषाद्रिपुरम कॉलेज द्वारा सूखा कचरा संग्रहण केन्द्र जयनगर एवं वर्षा जल संचयन केन्द्र ले जाया गया। जहाँ पर हमें इन से सम्बन्धित बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई एवं अंतिम दिन इस सात दिवसीय राष्ट्रीय एकता शिविर का समापन हुआ, जिसमें विभिन्न राज्यों से आए स्वयंसेवकों को पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये।

सात दिवसीय इस राष्ट्रीय एकता शिविर में मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। इस शिविर में विभिन्न राज्यों से आए स्वयंसेवकों की संस्कृति, वेषभूषा, खान-पान, भाषा, लोकनृत्य एवं जीवन शैली को समीप से जानने का अवसर प्राप्त हुआ।

राष्ट्रीय सेवा योजना एक ऐसा उपक्रम है, जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है, और विभिन्न शिविरों के माध्यम से अनेक प्रकार की व भिन्न-भिन्न जानकारी प्राप्त होती है। राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा इकाई शिविर से लेकर राष्ट्रीय स्तर शिविर लगाये जाते हैं, जिसमें भिन्न - भिन्न राज्य, शहर से आए स्वयंसेवकों से परिचय होता है एवं उनकी संस्कृति को जानने का अवसर प्राप्त होता है। डॉ. गोपाल सिंह खराड़ी एवं डॉ. धीरेन्द्र केरवाल सर ने मुझे इस शिविर में सहभागिता करने की प्रेरणा दी।

शुभम पंवार
एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर (हिन्दी)

प्रौढ़ शिक्षा

प्रौढ़ शिक्षा उन प्रौढ़ व्यक्तियों को शैक्षिक विकल्प देना है, जिन्होंने अज्ञानता व निर्धनता आदि कारणों से पढ़ने का अवसर गवां दिया है। लेकिन अब साक्षरता, कौशल विकास और इसी तरह की अन्य शिक्षा की आवश्यक्ता अनुभव करते हैं।

प्रौढ़ शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सरकार द्वारा कई कार्यक्रम चलाए गए हैं। शिक्षा की उपयोगिता समझाते हुए एक प्रौढ़ उनको अपनी बोली में इस प्रकार समझाता है –

प्रौढ़ – चाल रे दादा भणवा ने चाला मास्टर भणावा ने आया रे,

अनगढ़ – मुतो भणवा ने कोनी चालु खेते हुडा (तोता) ताडुंगा भणने मारे कई करनों मक्यिा हैकि ने खाऊंगा।

प्रौढ़ – पेट भरवा रो कई है रे वेन्डा, टेगड़ा पेट भरीले रे, भणवा तीतो ऐरे वेन्डा मनक जमारों हदरे।

अनगढ़ – मुतो भणवाने कोनी चालू मास्टर तो डंटीया वी मारे, छोरा ती थापड़ा दे वाड़े।

प्रौढ़ – डंटीया री पढ़ाई भागी रे नयी पढ़ाई चाली रे उच्च महात्मा गाँधी री बुनियादी शिक्षा जागी रे।

अनगढ़ – मुतो भणवा ने कोनी चालू दने मारे काम घणों दने मारे हर हाकवा ने जाणों।

प्रौढ़ – दने थारे काम घणों, राते भणवाने चालाँगा भणलांगा तो अरे वेन्डा रामायण भी वाचांगाँ।

अनगढ़ – रामायण भी वाचाँगा तो तुभी आयीरो भणवाने।

सारांश – एक पढ़ा लिखा शिक्षित व्यक्ति अपने अनपढ़ मित्र से शिक्षा लेने के लिए कहता है। वो अपने मित्र से कहता है कि पाठशाला में गुरूजी पढ़ाने आये हैं। अनपढ़ दोस्त कहता है कि मैं तो शिक्षा लेने नहीं आऊंगा। मैं तो खेत में तोते ऊड़ाने जाऊंगा। शिक्षा से मुझे क्या काम है ? मैं तो खेत पर भुट्टा सेककर खाऊंगा। शिक्षित व्यक्ति कहता है कि पेट भरने का क्या है रे ? पागल कुते भी पेट भर लेते हैं। शिक्षा से तो जीवन सुधर जाता है। लेकिन अनपढ़ फिर कहता है कि मैं शिक्षा लेने नहीं आऊंगा क्योंकि गुरूजी तो लकड़ी से मारते हैं, और लड़कों से मार दिलवाते हैं। शिक्षित कहता है कि लकड़ी की शिक्षा अब नहीं रही है। अब तो महात्मा गाँधी की अच्छी पढ़ाई होती है। अनपढ़ कहता है कि दिन में मुझे काम बहुत है। दिन में मुझे खेत में हल चलाने जाना है, लेकिन फिर शिक्षित व्यक्ति बोला कि दिन में तुझे काम है तो रात में पढ़ने जायेंगे। पढ़ने से तो अरे पागल रामायण भी पढ़ेंगे। शिक्षित व्यक्ति की बात समझकर अनपढ़ कहता है कि रामायण भी पढेंगे तो मैं भी शिक्षा लेने आ रहा हूँ।

जीवन लाल वरतीया

बी.ए. तृतीय वर्ष

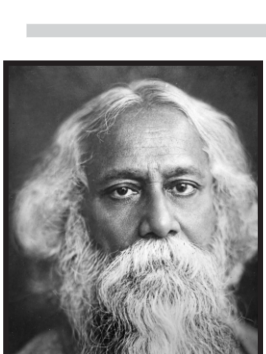

एक इन्सान का जीवन उस
महानदी की तरह होता है,
जो अपने बहाव से नवीन दिशाओं
में भी अपनी राह बना लेती है।

– रवीन्द्रनाथ टैगोर

वीरता के प्रतीक : शिवाजी महाराज

प्रस्तावना :- आवश्यकता अविष्कार की जननी है। जब आवश्यकता होती है तो उसे पूरा करने का कोई ना कोई साधन भी मिल जाता है। इस प्रकार जब देश और समाज में अत्याचार बढ़ जाते हैं तो उनको दूर करने वाला कोई ना कोई वीर अवश्य जन्म लेता है। मुगल अत्याचार बढ़ रहे थे। लोगों में मुगल बादशाहों का मुकाबला करने की शक्ति नहीं थी। ऐसी परिस्थिति में हिन्दू धर्म के रक्षक शिवाजी का जन्म हुआ था।

जन्म :- शिवाजी का जन्म शिवनेरी दुर्ग में हुआ था। यह स्थान पूना में है। इनके पिताजी का नाम शाहजी भोंसले था। वे बीजापुर रियासत में एक ऊँचे सैनिक पद पर नियुक्त थे। इनकी माता का नाम जीजाबाई था। वह साध्वी, सदाचारिणी और गुणवती स्त्री थी।

पालन-पोषण :- शिवाजी का पालन - पोषण जीजाबाई ने किया था। वह शिवाजी को महापुरुषों की कथाएँ सुनाती थी। उन्होंने धर्म और जाति की रक्षा की भावना शिवाजी में कूट-कूट कर भर दी थी। शिवाजी पर उनकी माता की शिक्षाओं का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा।

अफजल खाँ की हत्या :- शिवाजी की बढ़ती ताकत को रोकने के लिए बीजापुर के शासक ने अपने सेनापति अफजल खाँ को भेजा। अफजल खाँ ने शिवाजी को पकड़ने का प्रयत्न किया, पर वह इसमें सफल नहीं हुआ। अफजल खाँ ने छल कपट से शिवाजी को पकड़ने की चाल चली। शिवाजी को इसका पता चल गया, उन्होने अफजल खाँ पर छुरे से वार कर उसे मार गिराया।

शिवाजी की शक्ति को कुचलने के लिये औरंगजेब ने अपने सेनापति शाइस्ता खाँ को भेजा। शिवाजी ने उसे भी मार दिया। औरंगजेब ने इस बार अपने सेनापति जयसिंह को भेजा। जयसिंह के कहने पर शिवाजी आगरा जाने के लिये तैयार हो गए। वहाँ औरंगजेब ने उन्हें बंदी बना लिया पर शिवाजी बड़ी चतुराई से औरंगजेब के बंदी गृह से भाग गये।

शिवाजी ने आगरा से लौटकर बहुत से और प्रदेश जीत लिये। उन्होंने राजतिलक के बाद रायगढ़ को अपनी राजधानी बनाया। सन् 1680 ई. में अल्प आयु में रायगढ़ में ही उनका निधन हो गया।

रामचरण पाटीदार
एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

तिरंगा

देश प्रेम की यह है शान, तीनों रंग हैं एक समान,
प्रथम रंग केसरिया, बलिदानों की राह बनाता, देश प्रेम के भाव जगाता।
दूजा रंग सफेद भी, हमको शांति से जीना सिखलाता।
सदा शांति को अपनाता, शिष्टाचार की बात बतलाता,
तीजा हरा रंग हरियाली, इसने प्रगति का रंग संभाला,
मेहनत कर के फसल उगायें, देश को हरा - भरा बनायें,
रंग सफेद में एक चक्र है, भैया चौबीस डंडी उसमें, समय के पहिये जैसा है।
यह भी आगे की राह दिखाता, देश प्रेम की बात बताता।
इस तिरंगे का करो सम्मान, यही है भारत की शान॥

अजय मूंदड़ा
बी.एससी. तृतीय वर्ष

माँ

मांगने पर जहाँ पूरी हर मन्नत होती है।
माँ के पैरों में ही तो जन्नत होती है ।।

माँ वो होती है जो मन की बात को कहने से पहले जान ले, जो हमारी आँखों को देखते ही पहचान ले, दर्द हो या खुशी, हमारी हर हरकत को दूर से ही देखकर जान ले। माँ वो अहसास है जो हर किसी को नहीं मिलता है। वो खुश किस्मत होता है जिसे माँ का प्यार मिलता है। अगर कोई दुनिया में हमसे बेपनाह प्यार करता है, वो हमारी माँ ही होती है। जो सिर्फ और सिर्फ हमारे लिए जीती है। माँ के बिना जीवन की उम्मीद नहीं की जा सकती। अगर माँ न होती तो हमारा अस्तित्व ही न होता। इस दुनिया में माँ दुनिया का सबसे आसान शब्द है, मगर इस नाम में भगवान खुद वास करते हैं। जब नवजात शिशु इस दुनिया में आता है तो सबसे ज्यादा खुशी नवजात की माँ को होती है। जैसे मानो कि दुनिया की सबसे कीमती चीज उन्हें मिल गयी हो। माँ अपने बच्चों के लिए कुछ भी कर गुजरने को तैयार रहती है। मनुष्य में ही नहीं हर प्रकार के जीव जंतु में यही होता है। अगर बच्चों पे आँच आने वाली होती है तो माँ सबसे पहले आगे आ जाती है। माँ अपने बच्चों के भविष्य के लिए ज्यादा चिंतित होती है। और माँ से ज्यादा कोई बच्चों से प्यार नहीं कर सकता है। माँ अपने बच्चे से प्यार तो करती है मगर जब पता चलता है कि बच्चा गलत रास्ते पर चल रहा है तो माँ एक गुरू की तरह उसे अपने पास बुला कर समझाती है और जरूरत पड़ने पर उस पर कठोर भी होती है। माँ से बढ़ कर इस दुनिया में कोई नहीं है। और यदि माँ न हो तो ये दुनिया सूखे रेगिस्तान के बराबर है। माँ को कभी ठेस नहीं पहुँचानी चाहिए। माँ ही ऐसी होती है जो बच्चे की हर स्थिति में बच्चे के साथ रहती है और उसका साथ देती है। माँ हमेशा अपने बच्चे को सही राह दिखाती है।

यह मन्नत कि फिर यही जहान मिले, फिर वही गोद, फिर वही माँ मिले ।।

वंदना बदेरा
बी.एससी. प्रथम वर्ष (बॉयोटेक)

मुस्कान मकवाना
बी.ए. प्रथम वर्ष

ज़िंदगी

ज़िंदगी क्या है ? यह अपने आप में एक दिलचस्प और उलझा हुआ सवाल है। सभी लोगों के लिये ज़िंदगी के अलग-अलग मायने हैं । किसी के लिये सुख तो किसी के लिये दुख, किसी के लिये खोना तो किसी के लिये पाना, किसी के लिये गिरना तो किसी के लिये संभलना .... क्या वास्तव में यही ज़िंदगी है ? या और कुछ ? अलग-अलग परिस्थितियों में ज़िंदगी के मतलब अलग-अलग हो सकते हैं। साँस लेना, पर्याप्त जीवन जीना, यही ज़िंदगी है क्या ? नहीं, मेरे लिये मेरी ज़िंदगी का मतलब और कुछ ही है। अपने सपनों या लक्ष्यों को पूरा करने के लिए जी-जान लगा देना यही मेरी ज़िंदगी है। जिसमें अपने जूनून को ढूँढ़ना और उसे पूरा करने में लग जाना है। इस पर मुझे कुछ पंक्तियाँ याद आती हैं -

दौड़ता भागता सा एक पत्थर
आदमी क्या इसी को कहते हैं ?
हर घड़ी कश - म- कश में रहता
ज़िंदगी क्या इसी को कहते हैं ?

जीवन एक संघर्ष है, एक चुनौती है। जहाँ उतार-चढ़ाव चलते रहते हैं। इन चुनौतियों का सामना कर के ही जीवन जीना चाहिए। यही है ज़िंदगी......

स्वयं से बात करें

बहुत अच्छी बात कही है स्वामी विवेकानन्द जी ने ''दिन में एक बार स्वयं से बात करें, अन्यथा आप एक बेहतरीन इंसान से मिलने का मौका चूक जाएंगे।'' ये ना भूलें कि आप एक बेहतरीन इंसान हैं। आप हमेशा अपने मन की बातें सुनें और उसे करें। जो कार्य आप कर रहे हो, उसी कार्य में अपना 100% डालिए और फिर देखिए वह काम कितना भी बड़ा हो परन्तु आप उस काम को बड़ी ही आसानी से कर पाएंगे। वो कहते हैं ना – 'सुनें सब की करें मन की।'

मुझे हरिवंशराय बच्चन जी की बहुत अच्छी पंक्ति याद आ रही है उसे छोटे रूप में प्रस्तुत करना चाह रहा हूँ –

''लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती, कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है, चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है, चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती, कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती''

किसी ने क्या खूब लिखा है : ''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत''। आप एक युवा साथी हैं। आप में जुनून, जज़्बा, हुनर भरा हुआ है इसे निकाल कर निखारें, इसका दुरुपयोग नहीं, सदुपयोग करें। आपके अलावा कोई ऐसा प्राणी नहीं है जो आपका साथी बने, आप स्वयं ही अपने एक सच्चे साथी हो।

हमेशा अपने स्वभाव को सच्चा व स्वच्छ रखना ही मानवता का सबसे बड़ा रूप है। इसलिए ही जीवन के प्रत्येक मोड़ पर सच्चा साथी खुद को ही कहा जाता है, क्योंकि आप दुनिया के पहले ऐसे इंसान हैं जो स्वयं की बात मान कर इस संसार को जीत सकते हैं। इसलिए दिन में एक बार स्वयं से बात जरूर करें।

पवनसिंह राजपूत
एम.ए. प्रथम सेमेस्टर

मनीष राठौड़
बी.ए. तृतीय वर्ष

जीत

विचारों को बदल के देखो , रास्ते खुद बदल जाएंगे।
देखे हैं, जो ख्वाब सुहाने, वो ख्वाब पूरे होते नज़र आएंगे।
परिस्थितियों से समझौता करके, कब तक अपने दिल बहलाएंगे ?
जीतना है, तो खुद को बदलो, जीत के मायने खुद बदल जाएंगे।

क्या लिखूँ ?

महाविद्यालय में ''सृजन छप'' रही है, मिला मुझे समाचार,
सोचा मैं लिख डालूँ, आर्टिकल दो-चार,
कविता लिखूँ, कहानी लिखूँ, या फिर कोई लेख,
इसी सोच में बैठा था, सिर घुटनों पर टेक,
पूछा दोस्तों से, कोई विषय बताओ या कोई प्रसंग,
जिसे पढ़ें मजे से, रह जाएँ सब दंग,
इन्हीं विचारों में खोकर, तुक्का एक लगा डाला,
टूटे-फूटे शब्दों में, इस कविता को लिख डाला।

हिन्दू संस्कृति में नववर्ष

भारत एक महान राष्ट्र है। भारत की संस्कृति विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है। भारत के अनेक धर्मों में हिन्दू धर्म महत्वपूर्ण है। हिन्दू संस्कृति में अनेक त्यौहार हैं, जिसमें नववर्ष सम्मलित है।

हिन्दू नववर्ष चैत्र शुक्ल पक्ष के एकम् को मनाया जाता है। हिन्दू नववर्ष को गुड़ी पड़वा के नाम से भी जाना जाता है। यह भारत के सभी राज्यों में मनाया जाता है, जिसमें महाराष्ट्र में बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है। इस दिन घर को सजाया जाता है एवं घर के आँगन में रंगोली बनाकर आँगन को सजाया जाता है। यह त्यौहार अपनी संस्कृति के अनुसार अपनी रीति-रिवाजों में मनाया जाता है। किन्तु हम इसका महत्व भूल गये हैं।

हमें सभी संस्कृतियों को सम्मान देना चाहिए और इसके साथ हमें अपनी संस्कृति को भी याद रखना चाहिए। हमारे नववर्ष और ईस्वी नववर्ष में बहुत अन्तर है।

ईस्वी नववर्ष जब भी आता है तो वह किसी प्रकार का कोई नयापन नहीं लाता है। जैसा दिसम्बर में था वैसा वह जनवरी में भी होता है। किन्तु जब हमारा नववर्ष आता है तो पूरे संसार में परिवर्तन कर एक नयापन ला देता है। सम्पूर्ण पृथ्वी अपना श्रृंगार करने लगती है। पेड़-पौधे अपने पुराने पत्ते गिरा कर नये पत्ते अंकुरित करने लगते हैं। ऋतुएँ परिवर्तित हो जाती हैं पूरा मौसम बदल जाता है। सम्पूर्ण पृथ्वी हरियाली से लहलहाती है। हरियाली में अपना पूरा रूप निखार लेती है।

इस प्रकार हमारे नववर्ष में पूरा भारत नया-नया दिखने लगता है। भारत में हर एक शुभ कार्य इसी माह से प्रारंभ किया जाता है। किन्तु अंग्रेजों की कूटनीति के कारण 1 अप्रैल को मूर्ख दिवस घोषित कर दिया। आज भी हम एक दूसरे को मूर्ख बनाने में लगे हैं। यह भारतीय संस्कृति पर अंग्रेजों का आघात था। आज हम अंग्रेजों के गुलाम नहीं हैं। हम उनकी गुलामी से स्वतंत्र हैं।

हमारा नववर्ष एक नई उमंग और नई ऊर्जा एवं उत्साह के साथ आता है। इसलिए हम अपने त्यौहार को पहचानें और इसको महत्व दें। हम दूसरे के नववर्ष को भी मनायें और अपना नववर्ष भी धूम-धाम से हिन्दू संस्कृति के अनुरूप मनायें। भारतीय संस्कृति को उत्कृष्ट बनायें। साथ ही इसका महत्व भी बढ़ायें।

विजय राठौर
बी.ए. तृतीय वर्ष

कान्हा पँवार
बी.एससी. तृतीय वर्ष

हारा नहीं हूँ मैं ...

थक कर बैठा हूँ, हार कर नहीं।
रफ्तार बहुत है मुझमें, अभी रुका नहीं।
बोझ बहुत होगा पर, मैं अभी तक झुका नहीं।
कितने भी इन्तकाम ले ले जिन्दगी,
बहुत किरदार निभा चुका हूँ मैं।
पर मुझसे कोई ये ना कहे कि थक चुका हूँ मैं।
थकूँगा मगर रुकूँगा नहीं,
झुकूंगा मगर हारूंगा नहीं।
इरादे हैं बड़े जिद्दी, हारने वे देंगे नहीं,
और मैं जब भी बैठ गया,
तो समझ लेना,
थक कर बैठा हूँ, हार कर नहीं।

अनुभूति (संकलित)

माँ! कल मेरे स्कूल में लेख प्रतियोगिता है। क्या आप मेरी मदद कर देंगी? – रिया ने स्कूल से आकर अपनी माँ से पूछा।

हाँ! क्यों नहीं बेटा, किस विषय पर लिखना है? – माँ ने प्यार से पूछा।

रिया ने कहा – प्रेम पर।

अरे! इतना सुंदर विषय है तुम स्वयं क्यों नहीं लिखती।

पर माँ मैंने तो अभी तक किसी से भी प्रेम नहीं किया। मायूस होकर रिया ने कहा।

लो भला इतना तो प्यार करती हो मुझसे, पापा से, परिवार से, आस-पड़ोस, यहाँ तक कि पेड़-पौधों के लिए तुम्हारी जान जाती है। यही तो प्यार है बैटा। माँ ने कहा।

मासूमियत से रिया ने कहा– पर माँ लोग तो कहते हैं जब स्त्री-पुरूष एक दूसरे को पसंद करते हैं और एक दूसरे के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं उसे प्रेम कहते हैं।

हाँ उसे भी कहते हैं। पर बेटा प्रेम इसके अलावा भी एक शाश्वत एहसास है। जो किसी से भी किया जा सकता है।

जैसे – किसी का ईश्वर से, माता पिता का अपने बच्चों से, कोई पुस्तकों से प्रेम करता है, तो कोई देश से प्रेम करता है। तुम्हें याद है चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, लक्ष्मीबाई की कहानियाँ, क्या इनके देश प्रेम को भुलाया जा सकता है? माँ ने कहा–

हाँ माँ आप सही कह रही हैं, तो मैं क्या लिखूँ- रिया ने पूछा

देखो प्रेम एक दैहिक आकर्षण नहीं वरन एक 'अनुभूति' है। एक एहसास है। जब किसी व्यक्ति या प्रकृति के किसी भी अंश को देखकर मन में स्नेह, ममता, अपनापन आकर्षण और भावात्मक लगाव महसूस हो, जहाँ मैं – तुम खत्म होकर सिर्फ 'हम' रह जाए, वही प्रेम है।

जैसे मेरी प्यारी बेटी मुझसे अगाध प्रेम करती है। कहते हुए माँ ने लाड़ से रिया को गले लगा लिया और रिया माँ के सानिध्य में पवित्र प्रेम की अनुभूति से भर उठी।

प्रिया ठाकुर
बी.एससी. तृतीय वर्ष

दीक्षा सोनगरा
बी.एससी. द्वितीय वर्ष

क्यों लोग मेहनत को नहीं पहचानते?

दो बहनें ट्रेन में सफर कर रही थीं। वे जिस ट्रेन में बैठी थीं उस ट्रेन में बहुत ज्यादा भीड़ थी। वे दोनों ट्रेन में बैठीं और ट्रेन चल दी। कुछ दूर चलने के बाद स्टेशन आया और ट्रेन वहाँ रुक गयी। वह देखती है कि एक भिखारी आता है, जो स्वस्थ है। सभी लोग उसे कुछ कुछ पैसे दे देते हैं। ट्रेन आगे चलती है और अगला स्टेशन आता है। वहाँ वह देखती है कि एक आदमी कुछ पुस्तकें बेचने के लिए लाता है तथा उस आदमी का एक हाथ टूटा हुआ है। वह आदमी सभी लोगों को पुस्तकें बताता है पर कोई भी उन पुस्तकों को नहीं खरीदता है। तब वह सोचती है कि आखिर क्यों लोग मेहनत को नहीं पहचानते? भीख मांगने वाले को लोग पैसे देते हैं लेकिन जो मेहनत करके खाना चाहता है उसकी लोग सहायता नहीं करते। हमें ऐसे लोगों की सहायता करनी चाहिए जो मेहनत करते हैं।

देश भक्ति, राष्ट्र निर्माण, देश प्रेम

भारत देश एक ऐसा देश है, जहाँ देश भक्ति से जुड़ी हुई अनेक प्रेरणाप्रद परम्पराएं हैं। देश के हर कोने में देश के प्रति मर मिटने की भावना एवं देश के प्रति न्यौछावर होने की भावना विद्यमान है।

देश सेवा और राष्ट्र निर्माण सीमा पर बैठे जवानों से लेकर सीधे छोटे से छोटे कारोबारी या व्यक्ति से जुड़ी होती है।

स्वतंत्रता दिवस या गणतंत्र दिवस पर तो हम देश भक्ति की भावना को व्यक्त करते ही हैं पर स्वच्छता के लिए हर दिन स्वच्छता की गाड़ी के साथ पूरी ईमानदारी से घूमने व काम करने वाला व्यक्ति भी देश भक्ति को ही प्रदर्शित करता है, ईमानदारी से स्कूल में पढ़ाने वाला शिक्षक भी देश भक्त है, अगर आप ट्रेन में टिकट लेकर इसलिए नहीं बैठते कि आपको टिकट चेक करने वाला पकड़ लेगा, बल्कि इसलिए टिकट खरीदते हैं कि यह आपका कर्तव्य है तो आप भी सच्चे देश भक्त हैं। अगर आप हेलमेट पुलिस के डर से नहीं बल्कि अपनी सुरक्षा के लिये पहनते हैं तो आप देश भक्त हैं। होटल पर बैठकर कागज डस्टबीन में होटल मालिक के डर से नहीं अपनी मर्जी से डालते हैं तो आप देश भक्त हैं।

देश का हर वो किसान देश भक्त है जो कडकड़ाती ठंड में और तपती धूप में अन्न पैदा करता है, और देश के हर कोने तक अन्न का दाना पहुँचाता है। वो माँ भी एक सच्ची देश भक्त होती है जो अपने बच्चों का सही तरीके से देखभाल करती है, उसके बावजूद घर के सभी काम बिना थके करती है, उसे समय पर भोजन मिले या न मिले लेकिन अपने परिवार, अपने बच्चों को भोजन कराती है। बाद में बचा हुआ खाना खुद खाती है। बिना स्वार्थ के इतना काम करने के बावजूद वो किसी सम्मान, किसी उपाधि की भूखी नहीं है, एक सच्ची देश भक्त है।

इसी तरह हिन्दुस्तान के हर कोने में देश भक्ति एवं राष्ट्र निर्माण से जुड़े लोग हैं जिनको किसी सम्मान किसी उपाधि की जरूरत नहीं होती है। देश का हर नागरिक अपने मायनों में देश प्रेम करता है। इसको कभी किसी तराजू या उपाधि से नहीं तोला जा सकता है।

हिम्मत सिंह मकवाना
बी.ए. तृतीय वर्ष

ज़िद्दी हैं हम

ज़िद है मेरी, अपने देश को एक सूत्र में बाँधने की,
ज़िद है मेरी, अपने देश में एकता फैलाने की,
ज़िद है मेरी, अपने देश की बुराइयाँ मिटाने की,
ज़िद है मेरी, अपने देश में अच्छाइयाँ फैलाने की,
ज़िद है मेरी, अपने देश में जाति, धर्म के भेदभाव मिटाने की,
ज़िद है मेरी, अपने देश में अमीर-गरीब, ऊँच-नीच के भाव मिटाने की,
ज़िद है मेरी, अपने देश को आगे बढ़ाने की,
ज़िद है मेरी, अपने देश को महान बनाने की,
इसलिए ज़िद्दी हैं हम, ज़िद्दी हैं हम।

दर्शना पाटीदार
बी.ए. तृतीय वर्ष

गोपाल राठोड़
बी.ए.तृतीय वर्ष

थेलेसीमिया जागरूकता अभियान

✻ क्या है थेलेसीमिया ?✻

1. थेलेसीमिया बीमारी आनुवांशिक होती है। इस बीमारी में रक्त नहीं बनता है। इस बीमारी से अधिकतर बच्चे ग्रसित होते हैं।
2. अगर माता-पिता थेलेसीमिया माइनर है तो आने वाले बच्चे की इस बीमारी की आशंका अधिक रहती है और बच्चा मेजर (रोगी) जन्म लेता है।
3. थेलेसीमिया पीड़ित बच्चों में जन्म से ही रक्त नहीं बनता है। उचित समय पर उपचार नहीं होने के कारण बच्चों की मृत्यु भी हो जाती है।
4. इस बीमारी का उपचार बहुत ही खर्चीला और कठिन है जिससे कि परिवार आर्थिक रूप से पूरा टूट जाता है।

✻ थेलेसीमिया से बचने के उपाय ✻

1. थेलेसीमिया माइनर का रक्त परिक्षण (HB ELECTROFORESIS) करवाकर इस रोग की स्थिति को पहचाना जा सकता है।
2. शादी करने से पूर्व लड़का एवं लड़की के रक्त का परीक्षण अवश्य करवा लेना चाहिए।
3. नजदीकी रिश्ते में विवाह करने से परहेज रखना चाहिए।
4. गर्भधारण के दो माह के भीतर भ्रूण PNT का परीक्षण करवाना चाहिए एवं भ्रूण में थेलेसीमिया के लक्षण पाते ही डाक्टर गर्भपात करवाने की सलाह देते हैं।

घबराएँ नहीं - थेलेसीमिया माइनर बीमारी नहीं है। वह व्यक्ति अपना सामान्य जीवन जीता है। उसे कभी भी इस बात का अहसास नहीं होता है कि उसके खून में कोई दोष है लेकिन आने वाली पीढ़ी को इससे बचाने के लिए जाँच आवश्यक है।

'मध्यप्रदेश थेलेसीमिया मुक्त अभियान'

सहायता

कहा जाता है कि कोई किसी की सहायता करता है तो भगवान उसकी सहायता करते हैं। किसी असहाय की सहायता करना वाकई में अच्छी बात है, पर उससे भी बड़ी बात है कि हम किसी ऐसे व्यक्ति की भी मदद करें जो दिखने में सक्षम एवं व्यवस्थित लगते हों। ऐसे व्यक्ति स्वाभिमानी होते हैं। वे लगने नहीं देते कि वे किन्हीं परिस्थितियों के शिकार हैं। ऐसे हमारे मित्र या सहपाठी भी हो सकते हैं जो हमसे रोजमर्रा की दिनचर्या में मिलते हैं। ऐसे व्यक्तियों की मनःदशा को भलीभांति परखना पड़ता है। इसके साथ ही रास्ते पर भी आपको कोई निःसहाय दिखे तो उसे भी आप नजरअंदाज नहीं करें। पर सबसे बड़ी बात है कि जब आप किसी की सहायता करें तो उससे किसी भी अपेक्षा के बिना करें। जब आप ऐसा करते हैं तो वह सहायता स्वार्थ के बजाए परमार्थ कहलाती है जो कि एक मनुष्य की मानवता का परिचायक है और उसे मनुष्य से देवतुल्य बना देती है।

रणजीत गुर्जर
बी.ए. द्वितीय वर्ष

एकाग्रता

किसी भी कार्य को करने के लिए जिस बुद्धि की आवश्यकता होती है उसे एकाग्रचित्त कहते हैं। एक बात जो कि ध्यान देने योग्य है, वह यह है कि आपका कोई भी क्षण ऐसा नहीं होता जबकि आपका मस्तिष्क सोचना बंद कर देता हो। मतलब हमारा दिमाग सतत् कार्य करता रहता है एवं यह एक मेमोरी की तरह कार्य करता रहता है जो कि कहीं ना कहीं लोड हो रही होती है। किन्तु कई बार ऐसा भी होता है जब आप कार्य कुछ और करते रहते हैं पर सोच कुछ और रहे होते हैं जिससे कई बार किया गया कार्य सही नहीं होता। जैसे कोई व्यक्ति किसी टेंशन में हो और वह चाय बना रहा हो तो हो सकता है या तो वो चाय में शक्कर ही न डाले या ज्यादा डाल दे। सबसे सटीक उदाहरण है हमारे पढ़ने का। जब हमें शिक्षक कक्षा में पढ़ा रहे होते हैं तब हम फिजिकली तो क्लास में होते हैं किन्तु मेंटली कहीं और। जिसका परिणाम यह होता है कि शिक्षक की कही हुई बातें हमें याद नहीं रहती। इसका ही दूसरा उदाहरण है जब पूरे वर्ष की स्टडी हमें याद नहीं रहती किन्तु अन्तिम समय में पढ़ा हुआ याद रह जाता है क्योंकि पूरे वर्ष हम पढ़ते जरूर हैं किन्तु हमारी एकाग्रता कहीं और होती है, किन्तु परीक्षा के समय हम एकाग्र होकर पढ़ते हैं। किन्तु जो विद्यार्थी पूरे वर्ष ध्यान से पढ़ता है वही परीक्षा में सटीक प्रश्न का उत्तर दे पाता है। इसलिए मैं सभी विद्यार्थियों से कहना चाहूँगा कि जो कार्य आप कर रहें हैं उस पर पूरा कान्सन्ट्रेट करें ताकि आप उस कार्य में निपुणता हासिल कर सकें।

विद्वत्जन भी कहते हैं कि आप जीवन में वही कार्य करें जिसे करने में आपको आनन्द प्राप्त होता है। इसका तात्पर्य यह है कि जिस भी कार्य में हम अभिरुचि विकसित करते हैं उसे करते समय हमारा ध्यान हो न हो मस्तिष्क उसे बार-बार करने के कारण ग्रहण कर लेता है और जब भी हम उसे करते हैं वह सही होता है। इसलिए कहना चाहूँगा कि वे लोग जीवन में अधिक सफल होते हैं जो एकाग्रता से कार्य करते हैं। इसीलिए विद्यार्थी अपनी अभिरुचि के अनुसार ही विषय का चयन करें एवं जीवन में उसे ही अपना व्यवसाय या प्रोफेशन बनाएँ।

मनीष बैरागी

एम.ए. (अंग्रेजी)

शांति और क्रांति

तलवार का म्यान से निकलना
समंदर की खामोशी का सैलाब होना
आकाश का गर्जना
परिवर्तन है।
शांति का क्रांति में
अभिव्यक्ति है।
विधि के विधान की
विधाता के शौर्य की
पाँच जन के हितार्थ जो
पाञ्चजन्य फूँकता है
रचता है युद्ध, बनता विध्वंस का कारण
कई बार शस्त्र न उठाना भी हिंसक होता है ......

अनुज पाठक

बी.ए. प्रथम वर्ष

बेटियाँ

फूल सी नाजुक होतीहैं बेटियाँ
पापा की परी होती हैं बेटियाँ
माँ की लाड़ली होती हैं बेटियाँ
भाई की प्यारी बहना होती हैं बेटियाँ

इन पंक्तियों से मैं यह कहना चाहती हूँ कि बेटियाँ मनहूस नहीं होती हैं, जो कि लोग उन्हें पैदा होने से पहले ही उनकी हत्या कर देते हैं। बेटियों को भी जीने का पूरा हक है। लोग सोचते हैं कि बेटियाँ पराया धन होती हैं, इसलिए वह उन्हें पढाने-लिखाने की बजाय घर के काम सिखाना ज्यादा जरूरी समझते हैं। और कुछ लोग तो यह तक कहते हैं कि हम लड़कियों को पढ़ाने में पैसा लगाएंगे तो उन्हें दहेज में क्या देंगे ? लेकिन लड़कियों को भी पढ़ने का आगे बढ़ने का अवसर मिलना चाहिए।

हमारे देश में अगर माता - पिता अपनी बेटी को यह कह दे कि तुम तो बेटा हो, तो यह सुनकर हम बेटियों को खुशी महसूस होती है। और दूसरी ओर अगर लड़कों को यह कह दिया जाए कि क्या लड़कियों की तरह बरताव कर रहे हो तो उन्हें क्रोध आ जाता है। ऐसा क्यूँ ? बेटी होना कोई गाली नहीं है। क्यूँ लड़के और लड़कियों में भेद भाव किया जाता है ? क्यूँ लड़कों को पढ़ाना जरूरी समझा जाता है लडकियों को क्यूँ नहीं ?

क्यूँ घर का काम लडकियाँ ही सीखें, लड़के क्यूँ नहीं ?

लड़के और लड़की में कोई अंतर नहीं होता है। दोनों ही समान होते हैं और हर जगह दोनों को समानता मिलनी चाहिए। बेटा अपने माता-पिता को गर्व महसूस करा सकता है तो बेटियाँ भी अपने माता -पिता को गर्व महसूस करा सकती हैं।

अंत में -

चहरे की मुस्कान होती हैं बेटियाँ,
माता-पिता की शान होती हैं बेटियाँ,
देश की पहचान होती हैं बेटियाँ।

इनकी हत्या करना बंद करो और इनका सम्मान करो। SAVE GIRL CHILD

पूनम
बी.ए. तृतीय वर्ष

भारत को सशक्त बनाना है

जागो भारत के युवा भारत को सशक्त बनाना है,
तम के अन्धकार से उजियारे में , भारत को लाना है,
काट, कुट बंधनों को राष्ट्रहित बढ़ाना है,
भर भ्रष्टाचार की खाई, प्रत्येक क्षेत्र में नव पल्लव लाना है,
भेद - भाव कर रहा है देश को खोखला, अंकुश हमें लगाना है,
उठ कर भर उड़ान, विश्व पटल पर भारत को अग्रलिखित बनाना है,
आकाश के देदीप्यमान नक्षत्र में भारत को चमकाना है॥

रागिनी यादव
बी.ए. तृतीय वर्ष

सब कुछ आसान है

सब कुछ आसान है, से हम ये समझ सकते हैं कि जो कार्य हम करना चाहते हैं और हमारी पूरी कोशिश है दृढ़ निश्चय के साथ कर रहे हैं और कुछ करने की शक्ति, जिज्ञासा हमारे अन्दर है, तो वो कार्य हम आसानी से कर सकते हैं। उसके लिए हमें कोई नहीं रोक सकता। यदि इंसान के मन में चाह हो तो अंधेरों में भी रोशनी दिख जाती है। कोई फर्क नहीं पड़ता है कि लोग आपके बारे में क्या सोचते हैं ? फर्क तो इससे पड़ता है कि आप अपने बारे में क्या सोचते हैं ? स्वयं को सोने के सिक्के की तरह बनायें, जो कभी नाली में गिर जाये तो भी उसकी कीमत कम ना हो। फैसला लेने से पहले सोचो, समझो और विचार करो, लेकिन एक बार अगर फैसला ले लो तो हर हाल में उस पर डटे रहो। ठहरो मत, आगे बढ़ते रहो। वक्त सही समय पर सबकी असलियत बता ही देता है। आपकी सब मुश्किलों के जवाब आपके पास हैं। बस खुद से सवाल करने की जरूरत है। किसी के पैरों पे गिरकर कामयाबी पाने से बेहतर अपने पैरों पर चलकर कुछ बनने की ठान लो। जीवन में पछतावा करना छोड़ो और कुछ ऐसा करो कि कभी पीछे पलट कर देखना ना पड़े।

जीवन में सफलता पाने के लिए थोड़ा जोखिम उठाना पड़ता है, सीढ़ियाँ चढ़ते समय ऊपर जाने के लिए नीचे की सीढ़ी से पैर हटाना पड़ता है। ना किसी से कोई ईर्ष्या, ना किसी से कोई होड़। मेरी अपनी मंजिलें, मेरी अपनी दौड़। माना कि ज़िन्दगी में हजारों लोग गिराने वाले होते हैं, मगर कोशिश करते रहने वालो के कदम कहाँ रुकते हैं। लोगों ने कई बार कोशिश की मुझे मिट्टी में दबाने की, लेकिन उन्हें नहीं मालूम कि मैं बीज हूँ, आदत है मेरी बार - बार उग जाने की। अपने आप पर विश्वास, समय पर ऐतबार और मेहनत पर भरोसा जिंदा रखिये, आपके सपने सच हो जायेंगे। जो व्यक्ति कभी हार नहीं मानता उसे कोई हरा नहीं सकता।

ज्योति कटारा
बी.एससी. द्वितीय वर्ष

शहीद जवान

बैठ कर केवल तेज धूप से, परिवारों पर साया नहीं करते।
बोल देने से केवल, दुश्मन मर जाया नहीं करते।
उठो अब कूच करो, है देश पूरा अब साथ में।
शूरवीरों की शहादत, केवल आँसुओं से जाया नहीं करते।
अब तो देना होगा खून, हमें भी लड़ना होगा, मरना होगा।
क्योंकि अपने शूरवीरों को, केवल फूल और आँसू भाया नहीं करते।
देश है सबसे प्रिय इन्हें, शहीदों के सपने इन्हें सताया नहीं करते।
चलो है जज्बा अब, हर हाथ एक साथ है।
ऐसे साहसी वीरों का, खून व्यर्थ बहाया नहीं करते।

अर्चना धानक
बी.ए. द्वितीय वर्ष

विकास गौड़

नव उद्यमी

मैं विकास गौड़ इस महाविद्यालय का पूर्व छात्र हूँ, मैंने यहाँ से सन् 2018 में बी.ए. पास किया है। मैंने महाविद्यालय के स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ द्वारा संचालित अल्पावधि स्वरोजगार प्रशिक्षण से प्रेरित होकर खान-पान के क्षेत्र में अपने भविष्य निर्माण की कल्पना की। प्राध्यापकों के प्रेरित करने पर मैंने जोखिम उठाने का दृढ़ निश्चय किया और प्रशिक्षण के लिए मैं इन्दौर, अहमदनगर (महाराष्ट्र) गया। वहाँ से लौटने पर मैंने रतलाम में ही शेक स्टूडियो , द राउण्ड कैफे, स्विस कैफे आदि में अस्थाई रूप से सेवा का कार्य कर व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया। इस व्यवसाय की बारीकियों एवं कठिनाइयों को समझा। खान-पान के क्षेत्र में काम करते हुए मुझे यह अनुभव हुआ कि यहाँ प्रतिस्पर्धा बहुत अधिक है अतः गुणवत्ता को बनाये रखना आवश्यक है। पारिवारिक स्थति भी आर्थिक रूप से बहुत मजबूत न होने के कारण अनेक ऐसे अवसर आये जबकि मुझे निराशा ने घेर लिया, किन्तु ऐसे कठिन समय में भी परिजन एवं दोस्तों ने हिम्मत दिलाई। इसी बीच इस महाविद्यालय में स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ द्वारा जिला स्तरीय कॅरियर अवसर मेले का आयोजन दि. 31 जनवरी एवं 1 फरवरी 2020 को किया गया। इस में फूड जोन में स्टॉल लगाने के लिए मेला प्रभारी डॉ. स्वाति पाठक मेडम ने मुझे अपना फूड स्टॉल लगाने के लिए प्रेरित किया। मेडम के सहयोग से मुझे मेले में सफलता मिली और मुझे अपनी एक अलग पहचान भी मिली। इस सफलता से मेरा आत्मविश्वास बढ़ा और मुझमें हिम्मत आई कि मैं भी सफल उद्यमी बन सकता हूँ। महाविद्यालय के प्राध्यापकों डॉ. दिनेश जाधव, प्रो. दिनेश बोरासी एवं डॉ. अन्जेला मेम ने सदैव मेरा मार्गदर्शन किया है।

सरकार द्वारा चलाई जाने वाली स्व रोजगार प्रशिक्षण योजना विद्यार्थियों को दिशा प्रदान करती है। अतः ऐसे प्रशिक्षण होते रहना चाहिए जिससे मेरे जैसे अन्य विद्यार्थियों को भी सही मार्गदर्शन और दिशा मिल सके। आज मैं आत्मनिर्भर होकर स्वयं का फूड वेन्चर आर.के. फूड्स के नाम से संचालित कर रहा हूँ।

अनुराधा राठौर
बी.ए. द्वितीय वर्ष

भ्रूण हत्या

एक किलकारी सुनने को कान तरस जाते हैं।
कुछ लोग बेटी होने पर अभागे समझे जाते हैं।
एक औलाद की आस में मन्नत के धागे बांधते हैं।
कुछ लोग बेटी को जन्म से पहले ही मार देते हैं।
माँ की परछाईं , पिता का गौरव दोनों का अंश कहलाती हैं।
फिर क्यों जन्म से पहले वो कोख में मारी जाती हैं ?
बेटी, बहन, बहू, माँ हर कसौटी पर खरी उतरती हैं।
फिर क्यों जीवन जीने के हक से वंचित रह जाती हैं ?
बेगुनाह होने पर भी जो हर गम सहती जाती हैं।
फिर क्यों हर वक्त वह बेटे से कम समझी जाती हैं ?

सफलता का मंत्र

पहली सीढ़ी ज्ञान की, वह है अक्षर ज्ञान।
इस पर चढ़कर ही मिले, कला और विज्ञान ।।

एक युवक ने आइंस्टीन से कहा- लोग आपको महान कहते हैं तथा दुनिया भर में आपकी प्रसिद्धि भी है। कृपा करके आप मुझे अपनी महानता का मंत्र बताएँ।

आइंस्टीन ने जवाब दिया, लगन और वह चुप हो गए। युवक ने पूछा वह कैसे ? तब आइंस्टीन ने प्रश्न का मुस्कुराते हुए जवाब दिया। मुझे गणित से भय लगता था व इस विषय में मैं अक्सर अनुत्तीर्ण हो जाया करता था। मेरे सहपाठी मेरा उपहास उड़ाया करते थे। एक दिन मैंने आत्ममंथन किया और मन लगाकर गणित के सवालों को धीरे-धीरे सरलतापूर्वक हल करने का प्रयास किया तथा जो सवाल कभी समझ नहीं आते थे वे भी सुगमता से हल होने लगे। इस तरह गणित के प्रति मेरी घबराहट सतत् लगन के कारण खत्म हो गयी। उस लगन का ही नतीजा है कि लोग मेरे सिद्धांतों को अमल में लाते हैं। इतना ही नहीं विज्ञान के क्षेत्र में भी मैंने सफलता अर्जित की है। वह सब इस 'लगन' महामंत्र के कारण सम्भव हो सकी है। वह युवक आइंस्टीन को धन्यवाद ज्ञापित कर यह कह कर चला गया कि यह मंत्र आपसे मैंने सीख लिया है।

अलशिफा शेख
बी.एससी. प्रथम वर्ष(बॉयोटेक)

ज़िन्दगी तुम खुद बनाते हो

मैंने पेट्रोल पंप पर काम किया - धीरूभाई अंबानी
मैं बचपन में जूते सिलता था - अब्राहम लिंकन
मैं दसवीं क्लास में फेल हो गया - सचिन तेंदुलकर
मैं शुरूआत में बस कंडक्टर था - रजनीकांत
अपनी फुटबॉल ट्रेनिंग की फीस भरने के लिए मैं चाय सर्व करता था - लियोनल मेसी

ये उदाहरण बताते हैं -
ज़िन्दगी वह नहीं है जो तुमको मिलती है। ज़िन्दगी वह है जो तुम बनाते हो।

जाहरा मिर्जा
बी.ए. द्वितीय वर्ष

पल-पल हमारी जिंदगी यादों में बदलती जा रही है।
बस इतना क़ाबिल बनना है कि,
हमारी जिंदगी को लोगों की यादों में बसा सकें।।
परेशानियाँ जो हैं, वह रहना चाहिए,
डर जो है वह रहना चाहिए,
क्योंकि जिंदगी को आम रहकर भी क्या जीना ?
हर पल खास और हर पल को जीने का मजा होना चाहिए।।

अंशुल कसेरा
बी.एससी. द्वितीय वर्ष (कम्प्यूटर)

बेटी से घर स्वर्ग बनता है

बेटियों को यहाँ नहीं, सिर्फ इतिहास में ही पाओगे और बिन बेटियों के कैसी होगी दुनिया, यह सोचकर भी घबराओगे।

अरे ! बेटों की चाहत रखने वालो ! हर कोई बेटा चाहोगे, तो कहाँ से लाओगे ? अब भी जाग जाओ....!

इंदिरा गाँधी, प्रतिभा पाटिल को कैसे तुम भूल पाओगे ?

रानी लक्ष्मीबाई के बिना, इतिहास कहाँ लिख पाओगे ?

जब भी होगी अंतरिक्ष में जाने की चर्चा,

कल्पना चावला, सुनिता विलियम को कैसे भूल पाओगे ?

अब भी जाग जाओ ....!

सबकी होगी कलाइयाँ सूनी, राखी किससे बँधवाओगे ?

बिन तिलक के माथे होंगे, भाई-दूज कैसे मनाओगे ?

माँ वैष्णोदेवी की पूजा करने वालो ! नवरात्रि व्रत तो रख लोगे पर पूजन के लिए छोटी-छोटी कन्याएँ कहाँ से लाओगे ?

अब भी जाग जाओ वरना बाद में बहुत पछताओगे।

डॉली राठौर
बी.ए. द्वितीय वर्ष

जीवन

संघर्ष ही जीवन है, ये कहती दुनिया है।
जीवन डगर कठिन है, पग कहीं डगमगाया है॥

ताकत को अपनी पहचाना है, तूफान से जब टकराया है।
अनुभव मिलते रहते हैं, जीवन की परीक्षा ने सिखाया है।

फिसलती रही रेत हाथों से, मुट्ठी में कुछ ना बचाया है।
दर - दर की ठोकर सिखाती रही, समझ को बढ़ाया है॥

जीवन का दरिया बड़ा ही गहरा, गहराई जो जान पाया है।
जीवन को धन्य कर गया वो, नाम उसने कमाया है॥

प्रद्युम्न सिंह रघुवंशी
बी.ए. षष्ठ सेमेस्टर

राष्ट्रीय सेवा योजना - शिविर के अनुभव

दुनिया में हर प्रकार की चीजें सीखने के लिए एवं किसी एक मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए एक मंच मौजूद है। ये उस व्यक्ति की समझ है कि वह अपने अन्दर की प्रतिभा और अपनी रुचि को पहचाने और अपने लिए वह मंच तलाशे, जहाँ से उसकी आवाज दुनिया तक पहुँचे। जिस तरह कोई खेल के मैदान में बैठकर गायक कलाकार नहीं बन सकता और कोई गाने के मंच पर आकर खिलाड़ी नहीं बन सकता, चाहे उसके अन्दर कितना भी टेलेन्ट हो। कहने का तात्पर्य यह है कि हर इन्सान को अपने लिए एक सही मंच तलाशना जरूरी है। हम बात कर रहे हैं राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर की। वहाँ के अनुभव कि जहाँ हमने सात दिन बिताये। एनएसएस अपने अन्दर कई मंचों को समेटे हुऐ है जहाँ छात्रों को हर प्रकार का अनुभव होता है। एनएसएस का हमारा सबसे बड़ा अनुभव है समय प्रबंध। जिसे हम कह सकते हैं कम समय में ज्यादा कार्य।

शिविर में सुबह जल्दी उठने का अनुभव जो प्रभात फेरी से मिला। अपने स्वास्थ को कैसे ठीक रखें ? यह शिविर में सुबह पीटी, व्यायाम और योग से मिला। लोगों के बीच अपनी बात कैसे पहुँचाना है ? ये अनुभव गाँव में जागरूकता नाटक से मिला। संचालन कैसे किया जाता है ? ये बौद्धिक कार्यक्रम से सीखने को मिला। गायन कला, नृत्य नाटक की प्रस्तुति देना ये सभी छात्र सांस्कृतिक कार्यक्रम से सीखते है। टीम वर्क जो श्रम दान से सीखने को मिला। समूह नियंत्रण जो शिविर नायक से सीखने को मिला। लेकिन अनुशासन सबसे महत्वपूर्ण चीज है, जो छात्र इतना जल्दी नहीं सीख सकता है। किसी भी व्यक्ति को अनुशासन में रहना बहुत कठिन कार्य है।

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर के मेरे यही अनुभव हैं, जो मैंने वहाँ सात दिन में सीखे। ये सभी चीजें मुझे सीखने को मिली।

हिम्मतसिंह मकवाना
बी.ए. तृतीय वर्ष

ख़्वाब मेरे

ज़िन्दगी को अपनी मैं बड़ी बना पाऊँ,
जहाँ मैं अपनी सांसों को खुली छोड़ पाऊँ ,
अपने अक्श को उस दर्पण में चमकता देख पाऊँ ,
बस यही कुछ हँसीन, कुछ शौकीन, कुछ यकीन से ख़्वाब हैं मेरे॥

क्यों मेरी मुस्कुराहट को गलत समझ लेते हैं लोग ?
लड़की हूँ इसलिए क्या हँसना भूल जाऊँ ?
ज़िंदगी एक हँसीन सा सागर है दोस्तो,
इसकी लहरों में डूबती चली जाऊँ,
तो क्यों न मैं उड़ने को तैयार हो जाऊँ ?

हक़ है मेरा ! इस नीले आसमान को पार कर जाऊँ,
बस ऐसे ही कुछ हँसीन, कुछ यकीन, कुछ शौकीन से ख़्वाब हैं मेरे॥

आयुषि जाट
बी.ए. तृतीय वर्ष

लड़कियाँ (संकलित)

हँसती हैं खिलखिलाती हैं, लड़की-लड़के में भेद किये बिना
दोस्त बनाती हैं लड़कियाँ।
अपने-अपने किस्से कहानियाँ फेसबुक पर बतलाती हैं लड़कियाँ।
उठाया बैग और हफ्ते दस दिन के लिये,
किसी पर्वतीय प्रदेश में घूमने भी निकल जाती हैं बेधड़क लड़कियाँ।
निपटाती हैं सहजता से सारे अपने काम,
काम चाहे दफ्तर के हों हाट के या बाजार के,
बड़ी खूबसूरती से कर रही हैं, अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह लड़कियाँ।
किसने देखा है आने वाला कल,
इसलिये आजकल लड़कियाँ जी रही हैं हर पल।
इधर मारी, जलाई जा रही हैं लड़कियाँ,
उधर विपरीत हवाओं से लड़ते हुए मुस्तैदी से,
आगे कदम बढ़ाए जा रही हैं लड़कियाँ।
दुनिया वालो स्वागत करो कि अब आ रही हैं लड़कियाँ ॥

रोशन आरा रेहमानी
बी.एससी. द्वितीय वर्ष

पर्यावरण की रक्षा

आओ हम करें पर्यावरण की रक्षा,
हम से हो पेड़ों की रक्षा,
गाँव की हो सुरक्षा देश की हो सुरक्षा,
शिक्षा से करेंगे पेड़ों की रक्षा,
प्रकृति से हमारा नाता है,
प्रकृति ही जीवन दाता है,
पेड़ों से ही चलता जीवन,
पेड़ों से ही होती बारिश,
तभी तो जीवन खुश रहता है।
निरोग हमें रहना है तो,
करनी होगी पर्यावरण रक्षा,
जंगल की हम करें सुरक्षा,
आओ हम करें पर्यावरण की रक्षा ॥

लोकेन्द्र मकवाना
बी.ए. तृतीय वर्ष

रुकना नहीं है तुम्हें

कुछ चलते हैं इस राह पर,
कुछ गिरते हैं, इस राह पर,
चलने वाले गिरकर, उठना सीख जाते हैं,
गिरने वाले उठकर, चलना सीख जाते हैं।

मार्ग में कुछ काँटे हैं लेकिन,
रुकना नहीं है तुम्हें,
काँटों के डर से रुककर,
फिर उठकर चलना ही है तुम्हें।

मार्ग बहुत ही लम्बा है लेकिन,
थक ना नहीं है तुम्हें,
चलते-चलते पैरों में दर्द होगा जरूर,
लेकिन रुकना नहीं है तुम्हें।

वर्षा शेर चौधरी
बी.एससी. तृतीय वर्ष

किरण उम्मीदों की

किरण सूरज की कहीं
रोशनी भर जाती है।
कभी ये किरण उजाले का
संसार बन जाती है।
कभी निराशा से डूबे व्यक्ति को नई राह
बता जाती है।
तो कहीं भटकते राहगीर को
मंजिल तक पहुँचा जाती है।
कभी ये सोए छोटे बच्चे को नींद से जगा जाती है।
तो कभी ये पेड़ों में ऊर्जा का संचार भर देती है।
कभी यह सुबह धरा पर लालिमा बिखेर देती है।
तो कभी शाम में बादलों को गुलाबी रंग से भर देती है।
अद्भुत है प्रकृति और प्राकृतिक नज़ारे,
जिसमें ये किरण सभी को रोशन कर जाती है।

दिनेश मालवीय
बी.एससी. तृतीय वर्ष

याद फिर आने लगे (संकलित)

यादों की गलियों में,
जब जब विचरते पाँव।
मन आकुल होता है,
ढूंढ़ता है वह ठाँव।
रवि रश्मियाँ सजाती,
आँगन की रंगोली।
हर साँझ दीप जलता,
पावन तुलसी भोली।
कलकल सरिता धारा,
बहती लहरिया नाव।
बैठे चौपाल सभी,
सुख दुख निज बतियाते।
घरेलू मसलों के हल,
पल में ही हो जाते।
बूढ़ा बरगद देता,
निज नेह शीतल छाँव।
घनी विटप की छाया,
आशीष भरे आँचल।
नीम पीपल अन्य सदा,
देते थे नित संबल।
ठूंठ हो गए सब वृक्ष,
मनुज खेल रहा दाँव।
स्मृतियों के अरण्य में,
घूम रहा है ये मन।
सोच रहा प्रतिपल ये
आज कहाँ आये हम ?
याद फिर आने लगे,
अमराइयों के गाँव।

मेघा मेहता
बी.एससी. तृतीय वर्ष

मुझे सहेजना है घर

दादा ले आना एक संदूक
जाओ जब भी शहर
उसमें रखने हैं मुझे
चिट्ठी-पत्तर, किताबें, कागज, कलम
और रखना है उसमें
मां के साथ तुम्हारा,
तुम्हारे साथ मेरा फोटो भी
कुतर दी है शैतान चूहों ने,
चिट्ठी-पत्तर और किताबें
बुहारी हुई धूल से अब पीले पड़ गए है
कागज सफेद
कलम की स्याही नीली,
सुखकर काली हो गई है कोयले-सी
घर की कच्ची दीवार में लकड़ी की खूंटी पर
टंगा धूल से सना झोला
झोले में रखा हमारा ब्लैक एंड व्हाईट फोटो
कहीं भीग न जाए बारिश भरी अंधेरी रातों में
इससे पहले ही
मुझे सहेजना है घर हमारा।

संजय आटेड़िया
शोधार्थी हिन्दी

Rohit Singh Gehlot
B.A. (English Literature)

Lessons of life

The art of **learning**,

Starts every **morning**.

You will love the fun of **subjects**,

Where each one is different from the next.

Maths is easy,

But the calculations make everyone **busy**.

The **chemistry** and **history**,

Where everything remains a **mystery**.

The concept of **physics**,

Are like English **lyrics**.

The list of **botanists** is very large,

Who collect sample of plant in a **barge**.

You have to remember a no of **logy**,

If you want to study **zoology**.

You can only understand **computer,**

When you have a **good tutor**,

If you want to excel,

You connot afford to miss physical,

So take interest in **every subject**,

They will make you the **best**.

OJASVI JAIN
M.Sc. (CHEMISTRY)

Women Empowerment

"There is no tool for development more effective than the empowerment of women".- Kafi Annan.

Women is a complement and supplement to man. It is she who provides moral courage and makes him face all the difficulties which he confronts everyday. Human life cannot exist without a woman, she is mentally stronger and has better will power than man.

Beti Bachao Beti Padhao nation wide scheme initiated by India's prime minister Mr. Narendra Modi on 22nd Jan 2015 at Haryana to address the issue of deteriorating child sex ratio as well as empowering girl child in our country. This is a joint initiative of ministry of women and child, Ministry of health and family welfare and Ministry of HRD.

According to the census data of 2011, the child sex ratio was 919 girls for every 1000 boys, which is very alarming this drastic condition is mainly due to the practice of female foeticide. To address this issue, Beti Bachao Beti Padhao scheme was launched in selective 100 districts with an initial Corpus of 100crore.

This scheme aim to save the rights of girl child improve it. This eradicate female foeticide, give them proper security and education and lead to there personal and professional development all over the country. The scheme carried out various awareness campaign for creating a large-scale female welfare scheme.

The biggest picture here is creation of an ecosystem of women empowerment by elimination social discrimination against girl child.

NEVER TO GET DISHEARTENED

Since Alice was born, she used to get ill frequently. Even when she was about to born doctors said that either the mother or the child could be saved but fortunately both survived. Gradually she grew up and like other kids went to school. People say that school life is the best part of life. But for Alice there was twist in this psychology.

The school life was fun and she enjoyed it a lot but she had no friends who could be called Soulmate. After the school life her college life journey began. There in her graduation phase she met a girl for short duration, who she thought to be the Soulmate, ditched her. She somehow came out of that dilemma and the journey of finding "soulmate" resumed. She had friends but the friend of self-interest.

Then, on the last day of her graduation she faced a heartbreak due to her so-called friends' behaviour. This time she got fully disheartened. She was badly shattered from inside all day crying, not eating food, sitting lonely and just complaining and blaming God for all her situation..... "WHY ALWAYS WITH ME?" Her parents supported her, helped her to come out of that situation. she started sighed - "HOPE, I TOO HAVE HAD SUCH A FRIEND", whenever she sees others.

Then one day her most awaited miracle happened, table turns, she met a girl, named Jenny, they both were from same background and also went on a tour but interestingly they didn't know each other. They were same in behaviour, nature, what one calls the perfect resemblance. Gradually that bond gripped strong, stronger and strongest and deepest one. Finally she found her SOULMATE. The sad part was that she got her in the last phase of academic years.

Now with all these happenings she learned one thing that never to get disheartened. God has reserved for you the best thing no matter how long it takes for it to reach you but He will surely give it to you at the right time.

The girl Alice is none other than myself and her soulmate Jenny is none other than my bestiee. We carry the same bond and this joy continues.

Parul Chopra - M.A.(English)

THERE IS WILL THERE IS A WAY

Generally, all of us have a goal in life which we work to achieve: however the final goal is achieved only by the people who have trong will power & work hard with complete dedication.

Proverb like "where there is will; used and experinced in our daily life, when someone wants to get something from his heart he tries to get it with all his efforts and will power. Will power is necessary to create a way of surety of getting goals of life. Most of us do not succeed in life as we don't have strong determination & will towards achieving the goal. Most of the people who are not determined towards their goal generally lend to curse their misfortune or fate.

But the fact of getting failure in life is that we don't have will and dedication towards the task. We should blame ourselves and our negligence only and not our fortune. Having wish to get something is not enough; we have to work actively in right direction with strong will power.

Kavita Rathod- M.Sc. (Chemistry)

Changing value system - A need for re-orientation

"Values are not taught instead they are caught". With the advancement of science in 21st century, many things got changed or replaced, even the value systems too. Their has been a termendous shift which had lead to the decline of moral, ethical, social and professional values.

Those days are done, when values and ethics ruled the society, nowdays consumerism and materialism have become the new god. The tussle between the new and old value system is increasing day by day and peace and spirituality is getting beyond the reach of common man. The result of all this drastic changes is that stress related disorders are becoming very common.

This is a high time for us to ponder upon this issue who is a stich in time saves nine and we all should just undergo a re-orentation and shift oursselves back to the old value systems. We all have to put efforts to make this world a place where one's character is more important than money, where there is no place for stress and where peace rules the society.

ADITI JOSHI

B.Sc. 1st Year (Biotechnology)

Truths Of Life

- Nobody is real in this world except Mother.
- Truth is simple, But the moment you try to Explain it, ir becomes difficult.
- When you happy you enjoy the 'Music' but when you sad, you understand the 'lyrics'.
- In life two things define you "your Patience" when you have nothing & "your attitude" when you have everything.
- It is very easy to defeat someone But it is very hard to win someone.

-APJ Adbul Kalam

Kirti Bairagi

M.Sc. (Microbiology)

राष्ट्र गान

जन गण मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब सिन्ध गुजरात मराठा
द्रविड़ उत्कल बंग।
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशीष मागे।
गाहे तव जयगाथा।
जन गण मंगलदायक जय हे
भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय जय हे॥

GOVT ARTS AND SCIENCE COLLEGE RATLAM

Address : hospital road, ratlam (m.p.) 457001
email : hegaaspgcrat@mp.gov.in, pgcolrtm@hotmail.com